संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 323
पृष्ठ 8
बुधवार
12 अगस्त 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- बिस्तर पर लेटे-लेटे करें ये...

विचार- मोदी करते हैं बाबा बागेश्वर की बात...

खेल- संन्यास के बाद सचिन से लेकर कोहली...

सीएम बोले- माफिया-मच्छर' से मेडिकल हब बना पूर्वांचल

'वन डिस्ट्रिक्ट वन माफिया' से नहीं 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' से होती है पहचान

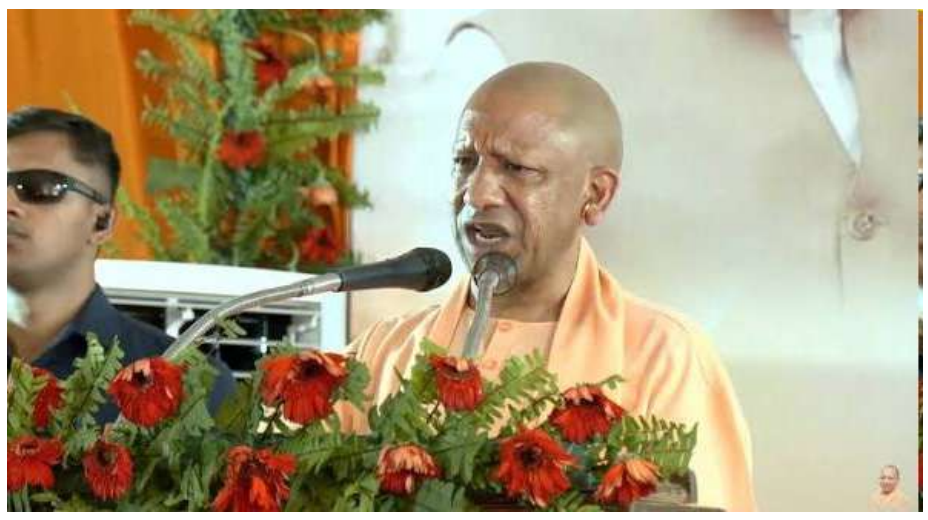

गोरखपुर,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को गोरखपुर के बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में आयोजित एक न्यूज चैनल के 'बदलता पूर्वी उत्तर प्रदेश' कॉन्क्लेव में उन्होंने विपक्ष पर जमकर निशाना भी साधा। अपने संबोधन में सीएम ने कहा कि पहले यहां माफिया और मच्छर हुआ करते थे। अब दोनों खोजने से नहीं दिखाई देते हैं। उन्होंने कहा कि– 'वन डिस्ट्रिक्ट वन माफिया' की जगह 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' ने ले लिया है। इसके साथ ही उन्होंने पूर्वांचल के विकास को लेकर सरकार की उपलब्धियां गिनाईं।

अब पूर्वी उत्तर प्रदेश के युवाओं को पिछड़ेपन, बेरोजगारी या नशे से जोड़कर देखने का समय नहीं है। आज यहां के युवाओं के सामने शिक्षा, रोजगार, स्वरोजगार और उद्योग के कई अवसर हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर पहले युवाओं की प्रतिभा का सही इस्तेमाल नहीं हो पाया तो इसमें युवाओं की गलती नहीं थी। कमी उस व्यवस्था में थी, जो उनकी क्षमता का उपयोग नहीं कर पा रही थी। सरकार ने युवाओं को अवसर और मंच दिया तो उन्होंने अपनी प्रतिभा साबित की और पूर्वांचल की अर्थव्यवस्था को नई दिशा देने में योगदान दिया।

मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि महात्मा गांधी के नाम पर लंबे समय तक सत्ता में रहने वालों ने गांधी के सपनों को जमीन पर उतारने का पर्याप्त प्रयास नहीं किया। उन्होंने काशी का उदाहरण देते हुए कहा कि महात्मा गांधी वर्ष 1916 में काशी विश्वनाथ मंदिर गए थे। वहां की संकरी गलियों और गंदगी को देखकर उन्होंने नाराजगी जताई थी। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में काशी विश्वनाथ धाम का भव्य स्वरूप सामने है।

योगी ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर और काशी विश्वनाथ धाम के विकास से धार्मिक पर्यटन बढ़ा है। इसका सीधा फायदा स्थानीय लोगों को भी मिल रहा है। पर्यटक होटल, रेस्टोरेंट, टैक्सी, फूल, बाजार, नाव और दूसरी सेवाओं पर पैसा खर्च करते हैं। इससे समाज के अलग–अलग वर्गों के लिए रोजगार और आय के नए रास्ते बनते हैं।योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पूर्वांचल के युवा प्रतिभाशाली हैं और उनके ऊपर किसी तरह का लांछन नहीं लगाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि युवाओं को उनकी क्षमता के अनुसार शिक्षा, रोजगार और उद्यम के अवसर मिलें।

वंदे मातरम बिल बना कानून, राष्ट्रपति ने दी मंजूरी,राष्ट्रगान जैसा ही अब होगा सम्मान

नई दिल्ली,एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मंगलवार को एक विधेयक को मंजूरी दे दी, जिसके तहत जानबूझकर राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' के गायन में बाधा डालना या उसे रोकना अपराध माना जाएगा। सरकार के एक बयान में कहा गया है कि इसे वही कानूनी सुरक्षा मिलेगी जो अभी राष्ट्रीय गान को हासिल है। राष्ट्रपति की सहमति से राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम (संशोधन) विधेयक, 2026, कानून बन गया है। लोकसभा ने 30 जुलाई को विधेयक पारित किया था, जबकि राज्यसभा ने इसे एक दिन पहले ही मंजूरी दे दी थी। इस विधेयक के अंतर्गत वंदे मातरम को राष्ट्रगान 'जन गण मन' के समान दर्जा दिया गया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस समारोह में पहली बार लाल किले की प्राचीर से वंदे मातरम गाया जाएगा। इससे पहले, राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम अधिनियम के तहत जानबूझकर राष्ट्रगान (जन गण मन) गाने से रोकना या ऐसे गायन में लगे किसी भी सभा में अशांति पैदा करना प्रतिबंधित था। इन अपराधों के लिए अधिकतम तीन साल की कैद, जुर्माना या दोनों की सजा हो सकती थी, जबकि दूसरी और उसके बाद की हर सजा के लिए कम से कम एक साल की कैद का प्रावधान था। पूर्ववर्ती कानून में राष्ट्रगान को समान संरक्षण प्रदान नहीं किया गया था। बिल में कहा गया था, अभी वंदे मातरम के गायन के अपमान को रोकने के लिए कोई खास कानूनी प्रावधान नहीं है, जबकि इसे राष्ट्रीय गीत का सम्मान प्राप्त है। इसलिए, किसी व्यक्ति को जानबूझकर राष्ट्रीय गीत गाने से रोकने या ऐसे गायन में लगी किसी सभा में बाधा डालने से रोकने के लिए, उक्त अधिनियम की धारा 3 में संशोधन करके राष्ट्रीय गीत को भी इसके दायरे में लाने का प्रस्ताव है, ताकि ऐसे कार्यों को दंडनीय बनाया जा सके। विधेयक में आगे कहा गया है कि संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 24 जनवरी, 1950 को कहा था कि बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित गीत वंदे मातरम, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी, को राष्ट्रगान जन गण मन के समान सम्मान दिया जाएगा और उसे उसके बराबर दर्जा प्राप्त होगा।

विदेश मंत्रालय ने चीन के दावों पर साफ किया रुख

अरुणाचल भारत का अभिन्न अंग, इस सच को कोई नहीं बदल सकता

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली में विदेश मंत्रालय ने बांग्लादेश और अरुणाचल प्रदेश से जुड़े दो अहम मुद्दों पर भारत का रुख स्पष्ट किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि भारतीय दूत दिनेश त्रिवेदी ने बांग्लादेश के प्रधानमंत्री रहमान से मुलाकात की। भारत ने उन्हें द्विपक्षीय यात्रा के साथ–साथ दिल्ली में होने वाले ब्रिक्स आउटरीच सत्र के लिए भी आमंत्रित किया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि भारत की ओर से बांग्लादेश के प्रधानमंत्री को द्विपक्षीय यात्रा के लिए आमंत्रित किया गया है। इसके अलावा उन्हें दिल्ली में आयोजित होने वाले ब्रिक्स आउटरीच सत्र में शामिल होने का न्योता भी दिया गया है। जायसवाल ने कहा कि इस मामले से जुड़ी आगे की जानकारी समय–समय पर साझा की जाएगी। दिल्ली में मीडिया ब्रीफिंग के दौरान विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने भारत–चीन सीमा संबंधी मामलों पर भारत का रुख स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच सीमा क्षेत्रों में शांति और स्थिरता बनाए रखना बेहद महत्वपूर्ण है। भारत ने यह भी स्पष्ट किया है कि सीमा की स्थिति का असर दोनों देशों के व्यापक द्विपक्षीय संबंधों पर पड़ता है। रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारत ने चीन के साथ बातचीत के दौरान हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि सीमा क्षेत्रों से जुड़े मुद्दे बेहद गंभीर हैं। उन्होंने कहा कि इन इलाकों में शांति और स्थिरता बनाए रखना सर्वोच्च महत्व रखता है। उन्होंने यह भी कहा कि सीमा क्षेत्रों की स्थिति दोनों देशों के व्यापक द्विपक्षीय संबंधों की स्थिति को दर्शाएगी। भारत ने हाल ही में हुई भारत–चीन सीमा मामलों पर WMCC की 36वीं बैठक में भी यही बात दोहराई। चीन की ओर से अरुणाचल प्रदेश को लेकर आई प्रतिक्रिया पर पूछे गए सवाल के जवाब में रणधीर जायसवाल ने भारत की स्थिति स्पष्ट की। उन्होंने कहा कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा है।

विद्यार्थियों के मामले में गृह मंत्री जवाब देने के लिए तैयार : बिरला

नयी दिल्ली,एजेंसी। लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मंगलवार को कहा कि सरकार विद्यार्थियों के मामले में सदन में चर्चा और गृह मंत्री के जवाब को लेकर सहमत है तथा इस मुद्दे पर सदन की कार्यवाही बाधित नहीं की जानी चाहिए। प्रश्नकाल शुरू होते ही विपक्षी सदस्य हंगामा करने लगे कि 20 जुलाई को राजधानी में पुलिस कार्रवाई की जवाबदेही तय की जाये और इसको लेकर गृह मंत्री अमित शाह सदन में बयान दें। समाजवादी पार्टी के सदस्य अयोध्या के राममंदिर में चढ़ावा चोरी की जांच की मांग को लेकर नारे लगाते हुए शोरगुल करने लगे। श्री बिरला ने कहा कि सरकार और विपक्ष दोनों को मिलकर सहमति बनानी चाहिए। सदन की कार्यवाही चलनी चाहिए। विपक्ष की जो प्रमुख मांग है कि विद्यार्थियों के मामले में गृह मंत्री जवाब दें या चर्चा में भाग लें, सरकार ने इस पर सहमति जतायी है। कल कार्य मंत्रणा समिति की बैठक में संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजीजू ने स्पष्ट रूप से कहा है कि गृह मंत्री विद्यार्थियों के मामले में जवाब देने को तैयार हैं।

कैंसर पर सुप्रीम कोर्ट सख्तः 19 राज्यों से पूछा–

कब होगी हर मरीज की अनिवार्य रिपोर्टिंग ?

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने कैंसर को 'नोटिफिएबल बीमारी' घोषित करने पर अब तक कदम नहीं उठाने वाले 19 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से उचित निर्णय लेने को कहा है। अदालत ने एक समान नीति और अनुपालन हलफनामे दाखिल करने की बात कही। यह मामला कैंसर की अनिवार्य रिपोर्टिंग, शुरुआती पहचान, राष्ट्रीय स्तर की रियल–टाइम डिजिटल कैंसर रजिस्ट्री और देशभर में स्क्रीनिंग व्यवस्था से जुड़ा है। च्स् में मौजूदा कैंसर रजिस्ट्री की सीमित कवरेज और अवैज्ञानिक वैकल्पिक उपचारों के दावों को लेकर भी चिंता जताई गई है। बता दें कि 'नोटिफिएबल बीमारी' यानी ऐसी बीमारी होती है, जिसके मामलों की जानकारी संबंधित सरकारी स्वास्थ्य अधिकारियों को देना अनिवार्य होता है।

शीर्ष अदालत का यह निर्देश उस समय आया, जब उसे बताया गया कि संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट में की गई सिफारिशों के आधार पर देश के 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में से 17 ने अब तक कैंसर को 'नोटिफिएबल बीमारी' घोषित कर दिया है। अदालत ने पिछले साल 12 दिसंबर को मशहूर डॉक्टर अनुराग श्रीवास्तव की जनहित याचिका पर केंद्र सरकार और सभी राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा था। याचिका में देशभर में कैंसर का जल्द पता लगाने और मरीजों को उचित उपचार एवं देखभाल सुनिश्चित करने के लिए इसे 'नोटिफिएबल बीमारी' घोषित करने का निर्देश देने की मांग की गई थी। मंगलवार को भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्य कांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची तथा वी. मोहना की पीठ ने केंद्र सरकार से पूछा कि वह सभी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के लिए कुछ अनिवार्य दिशानिर्देश क्यों जारी नहीं कर रही है। पीठ ने कहा कि इस मामले में एक समान नीति होनी चाहिए। इस मामले पर केंद्र सरकार की ओर से अदालत में पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल अनिल कौशिक ने कहा कि स्वास्थ्य राज्य का विषय है। CJI सूर्य कांत ने कहा कि हम बाकी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश देते हैं कि वे ऊपर बताई गई सिफारिशों पर विचार करें और उचित निर्णय लें। अनुपालन हलफनामे दाखिल करने होंगे।

अपनी याचिका में डॉक्टर अनुराग श्रीवास्तव ने पूरे भारत में कैंसर को नोटिफिएबल बीमारी घोषित करने में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा राज्यों की कथित विफलता को उजागर किया है। याचिका में कहा गया है, श्प्रतिवादी नंबर 1 (केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय) के खिलाफ उचित रिट मैंडमस जारी करें, ताकि भारत में कैंसर के मामलों की एक समान और अनिवार्य रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने के लिए कैंसर को नोटिफिएबल बीमारी घोषित किया जा सके। याचिका में कहा गया है, भारत में कैंसर का बोझ खतरनाक रूप से बढ़ने के बावजूद इसे नोटिफाई न करना संविधान के अनुच्छेद 14 और 21 के तहत राज्य के संवैधानिक कर्तव्य का गंभीर उल्लंघन है, क्योंकि यह एक जैसी स्थिति वाले नागरिकों को समान इलाज से वंचित करता है और स्वास्थ्य एवं सम्मान के साथ जीने के उनके मौलिक अधिकार को कमजोर करता है। याचिका में कहा गया है कि कैंसर के मामलों की अनिवार्य रिपोर्टिंग नहीं होने के कारण डेटा बिखरा हुआ है, निगरानी व्यवस्था प्रभावी ढंग से काम नहीं कर पा रही है।

तीन मांगों पर खरगे ने सरकार को घेरा, अपने रुख से पीछे नहीं हटेगा विपक्ष

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मंगलवार को कहा कि विपक्ष अपने रुख से पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने तीन प्रमुख मुद्दे गिनाए। इनमें 20 जुलाई को छात्रों पर हुई कथित पुलिस कार्रवाई, राम मंदिर के चढ़ावे की चोरी का मामला और इन मुद्दों पर सरकार से माफी की मांग शामिल है। उन्होंने कहा कि जब तक इन मुद्दों का समाधान नहीं होता, तब तक विपक्ष इन्हें उठाता रहेगा। खरगे ने सरकार पर संसद में बयान देने से बचने का आरोप लगाया। मीडिया से बातचीत में खरगे ने कहा, हम अपना रुख नहीं बदल रहे हैं। शुरुआत से ही हमारा रुख एक जैसा रहा है और हमारे तीन स्पष्ट मुद्दे हैं। छात्रों पर हुई कथित ज्यादती को लेकर उन्होंने कहा, पहला मुद्दा छात्रों पर लाठीचार्ज और गोलीबारी का है।

हम जानना चाहते हैं कि आदेश किसने दिया और यह कैसे हुआ। हम इस पर सदन में बयान चाहते हैं। खरगे ने आगे कहा, लाठीचार्ज के कारण कई छात्र बीमार पड़ गए। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। 100 से ज्यादा छात्र घायल हुए। कई छात्रों को पैलेट गन से चोट लगी। हम इस मामले पर भी बयान चाहते हैं। 18 दिन हो चुके हैं और बयान देने की उनकी कोई इच्छा नहीं है। वे सिर्फ जल्दी से एक टिप्पणी करके आगे बढ़ना चाहते हैं। उनका इरादा यही है। अन्य मांगों को गिनाते हुए कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, दूसरा मुद्दा श्चढ़ावा चोरीश का है और तीसरा सरकार से माफी की मांग है। ये तीनों मुद्दे शुरुआत से हैं। ये अभी भी अहम हैं और जब तक इनका समाधान नहीं होता, तब तक बने रहेंगे। झारखंड में छात्रों के प्रदर्शन और इंडिया ब्लॉक के भीतर दोहरे मापदंड के आरोपों पर खरगे ने कहा, यह अलग मुद्दा है।

राहुल अब क्यों भाग रहे हैं : किरेन रिजिजू

नई दिल्ली,एजेंसी। केंद्रीय संसदीय मंत्री किरेन रिजिजू ने मंगलवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर निशाना साधा और कहा कि अब जब गृह मंत्री अमित शाह उनके द्वारा उठाए गए सवालों के जवाब देने के लिए तैयार हैं तो राहुल गांधी को संसद से नहीं भागना चाहिए। किरेन रिजिजू की ये टिप्पणी हालिया छात्र प्रदर्शनों और प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई को लेकर हुए हंगामे के बीच आई है। इस मुद्दे पर संसद के मानसून सत्र में जमकर हंगामा हुआ और विपक्ष ने सरकार को इस मुद्दे पर घेरा हुआ है। विपक्ष इस पर गृह मंत्री अमित शाह की प्रतिक्रिया चाहता है और गृह मंत्री के संसद सत्र में शामिल नहीं होने पर सवाल उठा रहा है।

सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग से जानकारी मांगी

इस रफ्तार से तो अगले इलेक्शन आ जाएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को चुनाव आयोग से पश्चिम बंगाल में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) में हटाए गए नामों से जुड़े मामलों की जानकारी मांगी है। कोर्ट ने अपीलीय ट्रिब्यूनलों के फैसलों की डिटेल्स देने को कहा है।

ये अपीलीय ट्रिब्यूनल उन लोगों की अर्जियों पर सुनवाई करते हैं, जिनके नाम बंगाल प्च् के दौरान वोटर लिस्ट से हटा दिए गए हैं। कोर्ट ने ट्रिब्यूनल की संख्या, काम के घंटे और मामलों के निपटारे की रफ्तार जैसे मुद्दों की जांच करने पर सहमति जताई।

याचिकाकर्ता ने कहा कि ट्रिब्यूनल लोगों की अपीलों पर तेजी से फैसला नहीं कर रहे। कोर्ट ने कहा कि ट्रिब्यूनल में मामलों के निपटारे के लिए कोई टाइमलाइन तय नहीं कर सकते। कोर्ट ने ईसी से राज्य में एसआईआर से जुड़े मामलों में कितनी अपीलें दाखिल हुईं, कितनों पर फैसला हुआ और कितने मामले अभी लंबित हैं, इसकी जानकारी मांगी है।

इससे यह साफ होगा कि वोटर लिस्ट से नाम हटाए जाने के खिलाफ लोगों की ओर से दाखिल अपीलों पर ट्रिब्यूनल ने अब तक कितनी कार्रवाई की है। ट्रिब्यूनल में करीब 34 लाख अपील पेंडिंग हैं।

कोर्ट ने कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी की याचिका पर सुनवाई करते हुए यह निर्देश दिया। चौधरी ने अपीलेट ट्रिब्यूनल के सामने एसआईआर से जुड़े मामलों का जल्द निपटारा कराने की मांग की थी। पश्चिम बंगाल में प्च् की ड्राफ्ट लिस्ट में 58.20 लाख नाम कट गए हैं। ड्राफ्ट लिस्ट से पहले राज्य में 7.66 करोड़ थे, ड्राफ्ट लिस्ट में 7.08 करोड़ वोटर्स का नाम शामिल किया गया। काटे गए वोटर्स का प्रतिशत 7.6 है, यानी हर 100 से में लगभग 8 वोटर्स का नाम हटाया गया है।

स्कूल के बगल में नशे की दुकान...

प्रयागराज। स्कूलों के आसपास नशे के कारोबार पर रोक लगाने के दावे कागजों पर ही दिख रहे हैं, जबकि जमीनी हकीकत इसके उलट है। कस्बे के एक उच्च प्राथमिक एवं इंटर कॉलेज से मात्र 150 और दूसरे परिषदीय विद्यालय से करीब 300 मीटर की दूरी पर देशी शराब का ठेका संचालित हो रहा है।

फूलपुर, सहसों एवं सैदाबाद विकासखंड के बाबूगंज, थानापुर, भरौटी के ग्रामीणों ने स्कूलों की चहारदीवारी के आसपास गुटखा और तंबाकू उत्पादों की दुकानें होने की शिकायत की है। आरोप है कि कई बार संबंधित अधिकारियों से शिकायत की, लेकिन अब तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई। उनका कहना है कि स्कूल खुलने और छुट्टी होने के समय इन दुकानों पर बच्चों की आवाजाही रहती है, जिससे उनके नशे की गिरफ्त में आने का खतरा बढ़ जाता है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि जिम्मेदार विभाग नियमित निरीक्षण करे, तो स्कूलों के आसपास नशे की बिक्री पर अंकुश लगाया जा सकता है। संवाद कम उम्र में नशे की शुरुआत बच्चों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकती है। ऐसे में स्कूलों के आसपास नशे के उत्पादों की बिक्री पर रोक लगाने के साथ बच्चों और अभिभावकों को जागरूक करने की भी जरूरत है। क्षेत्र के सालिकराम पटेल, आशीष कुमार द्विवेदी और धर्म सिंह पटेल ने प्रशासन से स्कूलों के आसपास अभियान चलाकर नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कार्रवाई की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि नशे के सामान की बिक्री को लेकर कई बार जिम्मेदार अधिकारियों को जानकारी दी गई, लेकिन स्थिति जस की तस बनी हुई है। ग्रामीणों ने अब स्कूलों के आसपास नियमित जांच कराने और नशीले पदार्थों की बिक्री करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

कस्बे में स्कूलों के आसपास नियम विरुद्ध तंबाकू, गुटखा या शराब की बिक्री की शिकायत की जांच कराई जाएगी। यदि नियमों का उल्लंघन पाया जाता है तो संबंधित के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। – हीरालाल सैनी, एसडीएम फूलपुर।

हर-हर महादेव से गूंज उठे शिवालय

प्रयागराज। सावन के दूसरे सोमवार को शिवालय हर–हर महादेव के जयघोष से गूंज उठे। भोर से ही मंदिरों में जलाभिषेक के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही। गंगोली शिवाला मंदिर सहित अन्य शिवालयों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की कतार लगी रही। भक्तों ने आवास विकास कॉलोनी के शिव मंदिर, छतनाग के नागेश्वर मंदिर समेत अन्य शिवालयों में भक्तों ने जलाभिषेक किया। शिवालय हर–हर महादेव और बम–बम भोले के जयकारे गूंजते रहे। मंदिरों में भक्ति गीतों और शिव स्तुति से वातावरण पूरी तरह भक्तिमय बना रहा। स्वयंसेवकों ने भी श्रद्धालुओं को व्यवस्थित रूप से दर्शन कराने में सहयोग किया। ज्योतिर्विद राम जी त्रिपाठी ने बताया कि सावन मास में भगवान शिव का जलाभिषेक करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और जीवन में सुख, शांति एवं समृद्धि का वास होता है।

दिनभर भागदौड़ के बाद मात्र दो बोरी खाद का सहारा

प्रयागराज। खाद की किल्लत से किसानों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सुबह से शाम तक भागदौड़ के बाद समितियां से महज दो बोरी खाद में संतुष्ट होना पड़ रहा है। इससे उनकी उपज प्रभावित होने की आशंका बढ़ गई है। कौड़िहार की छह सहकारी समितियां पर किसानों की आवश्यकता के अनुसार यूरिया खाद नहीं मिल रही है। इससे किसानों को बाजार की दुकानों से अधिक कीमत देकर खाद खरीदनी पड़ रही है। किसान अजय कुमार, राम सजीवन ने बताया कि समय पर उर्वरक न मिलने से धान की फसल में छिड़काव नहीं हो पा रहा है। सहायक विकास अधिकारी सहकारिता धीरज कुमार यादव ने बताया कि यूरिया की कमी नहीं है। सचिव की कमी से रोस्टर के मुताबिक किसानों को खाद उपलब्ध कराई जा रही है। साधन सहकारी समिति लक्षनकापूरा में सोमवार को यूरिया लेने के लिए किसानों की दिनभर भीड़ रही। यूरिया लेने के चक्कर में किसान आपस में भिड़ते रहे। मेजा विकास खंड के एडीओ कोऑपरेटिव सच्चिदानंद दुबे ने बताया कि समिति में यूरिया का पर्याप्त स्टॉक है। किसानों को किसी प्रकार की दिक्कत नहीं होने पाएगी।

शिवालयों में उमड़ी आस्था की भीड़

प्रयागराज। सावन के दूसरे सोमवार को करछना क्षेत्र के प्राचीन शिवालयों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। शिवभक्तों ने सुबह से गंगाजल और दूध से भगवान शिव का जलाभिषेक किया।

दरोगा से इंस्पेक्टर बनने की 46 साल चली कानूनी लड़ाई, सेवानिवृत्ति के बाद 85 की उम्र में जीती

प्रयागराज। दरोगा से इंस्पेक्टर बनने की 46 साल चली कानूनी लड़ाई सेवानिवृत्ति के बाद 85 की उम्र में जीत ली है। हाईकोर्ट ने याची को 16 मार्च 1980 से इंस्पेक्टर पद पर पदोन्नति का लाभ देने का आदेश दिया गया है।

इंस्पेक्टर बनने की 46 साल चली कानूनी लड़ाई एक दरोगा ने सेवानिवृत्ति के बाद 85 की उम्र में जीत ली। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पूर्व दरोगा को 16 मार्च 1980 से इंस्पेक्टर पद पर पदोन्नति का लाभ देने का आदेश दिया है।

यह आदेश न्यायमूर्ति अरिंदम सिन्हा और न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह की खंडपीठ ने इटावा निवासी राम अवतार सिंह यादव की याचिका पर दिया है। कोर्ट ने कहा कि पुलिस विभाग यह साबित नहीं कर सका कि जिन प्रतिकूल प्रविष्टियों के आधार पर पदोन्नति रोकी गई, वे उन्हें कभी बताई भी गई थीं। कोर्ट ने माना कि पदोन्नति के मामले में पुलिस विभाग ने याची के साथ अन्याय व भेदभाव किया।

राम अवतार सिंह यादव 1999 में थानाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। पदोन्नति नहीं मिलने पर उन्होंने विभाग को प्रत्यावेदन दिया था। डीजीपी ने छह अप्रैल 2010 को उनकी पदोन्नति का दावा खारिज कर दिया था।

इसके बाद उन्होंने राज्य लोक सेवा अधिकरण का

दरवाजा खटखटाया, जहां उनकी याचिका 30 नवंबर 2012 को व समीक्षा याचिका 10 जून 2013 को खारिज हो गई। इसके खिलाफ उन्हों ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की, जो अदम पैरवी में 16 फरवरी 2015 को खारिज हो गई। इसके बाद याची ने पुनर्स्थापना अर्जी दाखिल की।

सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का हवाला देते हुए हाईकोर्ट ने के आदेश में कहा गया था कि याची को पदोन्नति के लिए चयन प्रक्रिया में शामिल किया गया था। उसका साक्षात्कार भी हुआ था। हालांकि, विभाग याची और अन्य सफल अभ्यर्थियों के प्राप्तांकों का कोई अभिलेख या अंकपत्र पेश नहीं कर सका।

प्रतिकूल प्रविष्टियों की जानकारी याची को कभी नहीं मिली खारिज हो चुकी याचिका को बहाल कर गुण–दोष के आधार पर सुनवाई शुरू की। कोर्ट ने पाया कि तत्कालीन डीजीपी था, लेकिन विभाग यह साबित नहीं कर सका कि ये प्रविष्टियां याची को विधिवत बताई गई थीं या नहीं। वहीं, याची ने भी यही दलील दी कि प्रतिकूल प्रविष्टियों की जानकारी उन्हें कभी नहीं दी गई।

कोर्ट ने अधिकरण (ट्रिब्यूनल) के रवैये पर भी कड़ी टिप्पणी की। कहा कि किसी व्यक्ति से यह साबित करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती कि उसे कोई बात कभी बताई ही नहीं गई। नकारात्मक तथ्य साबित करना संभव नहीं होता। विभाग को यह साबित करना चाहिए था कि प्रतिकूल प्रविष्टियों से याची को विधिवत अवगत कराया गया था। अधिकरण ने इस पहलू पर याची पर नकारात्मक तथ्य साबित करने का भार डालकर विधिक चूक की।

कोर्ट ने सरकार को आदेश दिया है कि याची राम अवतार सिंह यादव को 16 मार्च 1980 से इंस्पेक्टर पद की पदोन्नति का लाभ दिया जाए। साथ ही उनकी सेवानिवृत्ति तक का वेतन और अन्य अनुमन्य लाभ व उसके अनुरूप सेवानिवृत्तिगत लाभों की गणना कर भुगतान चार सप्ताह में किया जाए।

राम अवतार की नियुक्ति से हाईकोर्ट के फैसले तक का सफर

–नियुक्तिरू पुलिस विभाग में उपनिरीक्षक के पद पर नियुक्त हुए और बाद में स्टेशन ऑफिसर के पद पर कार्यरत रहे।

–16 मार्च 1980रू इसी तारीख से हाईकोर्ट ने उन्हें इंस्पेक्टर पद पर पदोन्नति का लाभ देने का आदेश दिया है।

– 1973 से 1996रू विभागीय रिकॉर्ड में अलग–अलग वर्षों की प्रतिकूल प्रविष्टियों और दंडात्मक प्रविष्टियों का उल्लेख किया गया।

– 1999रू राम अवतार सिंह यादव स्टेशन ऑफिसर के पद से सेवानिवृत्त हो गए। पदोन्नति का विवाद तब तक सुलझ नहीं सका था।

– छह अप्रैल 2010रू डीजीपी ने उनकी पदोन्नति के दावे को खारिज कर दिया।

– 30 नवंबर 2012रू राज्य लोक सेवा अधिकरण ने याची का दावा याचिका खारिज कर दिया।

– 10 जून 2013रू अधिकरण ने समीक्षा याचिका भी खारिज कर दी।

– 16 फरवरी 2015रू हाईकोर्ट में दाखिल रिट याचिका अदम पैरवी में खारिज हो गई।

– 11 दिसंबर 2025रू याची की बहाली अर्जी भी पैरवी के अभाव में खारिज कर दी गई।

– मई–जुलाई 2026रू 85 वर्षीय याची लगातार हाईकोर्ट में उपस्थित होकर अपनी बहाली और पदोन्नति के मामले की पैरवी करते रहे। कोर्ट ने विभाग से पुराने रिकॉर्ड और पदोन्नति प्रक्रिया से संबंधित दस्तावेज तलब किए।

– अगस्त 2026रू हाईकोर्ट से मिली जीत।

धर्म परिवर्तन का मामला: हाई कोर्ट ने कहा-बालिग बेटियों को बंधक बनाना स्वतंत्रता का उल्लंघन, पिता और सरकार को ये आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने धर्म परिवर्तन करने वाली सगी बहनों को पिता की ओर से हिरासत में रखने को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन बताया। कोर्ट ने कहा कि बालिग को अपनी आस्था, धर्म, निवास और जीवन से जुड़े फैसले स्वयं लेने का अधिकार है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने धर्म परिवर्तन करने वाली सगी बहनों को पिता की ओर से हिरासत में रखने को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन बताया। कोर्ट ने कहा कि बालिग को अपनी आस्था, धर्म, निवास और जीवन से जुड़े फैसले स्वयं लेने का अधिकार है। माता–पिता अपनी संतान के धार्मिक या व्यक्तिगत फैसलों से असहमत हो सकते हैं, लेकिन उनकी स्वतंत्रता नहीं छीन सकते।

इस टिप्पणी संग कोर्ट ने दोनों बहनों को अपनी पसंद के स्थान व व्यक्ति के साथ रहने की स्वतंत्रता दी। साथ ही पिता और प्रदेश सरकार को संयुक्त रूप से 25 लाख रुपये दोनों को मुआवजा देने का आदेश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति संदीप जैन की एकल पीठ ने बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर दिया है।

आगरा निवासी सगी बहनों की ओर से बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की गई थी। उसमें कहा गया था कि दोनों ने स्वेच्छा से इस्लाम धर्म अपना लिया है।

इससे नाराज माता–पिता ने उन्हें अवैध रूप से बंधक बना रखा है। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने दोनों को पेश किया तो बताया कि उन्होंने अपनी इच्छा से इस्लाम धर्म अपनाया है।

जबरन घर में रोका गया

एक बहन ने कहा कि मैं 35 वर्ष की है, जूलॉजी में एमएससी, एमफिल और बीएड कर चुकी हूं। मैंने धर्म परिवर्तन का निर्णय मानसिक शांति और आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए लिया था।

दोनों बहनों के अनुसार पिता उनके फैसले से सहमत नहीं थे। उन्हें वापस हिंदू धर्म अपनाने के लिए दबाव डालते रहे। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें जबरन घर में रोका गया। बाहर जाने और अपनी पसंद से जीवन जीने की स्वतंत्रता नहीं दी गई।

पहली बार तैयार होगा यूपी बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्रों का ब्लू प्रिंट, विषयों के दिशा-निर्देश तैयार

प्रयागराज। पहली बार यूपी बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्रों का ब्लू प्रिंट तैयार होगा। राज्य शिक्षा संस्थान के प्राचार्य ने बोर्ड के सचिव को संतुलित प्रश्न पत्र संग्रह भेंट किया है। कुछ विषयों के लिए दिशा–निर्देश तैयार हो गए हैं।

यूपी बोर्ड परीक्षा के प्रश्नपत्रों का पहली बार ब्लू प्रिंट तैयार किया जाएगा। विभिन्न विषयों के प्रश्नपत्रों के ब्लू प्रिंट की रूपरेखा बनाई जा रही है। राज्य शिक्षा संस्थान माध्यमिक स्तर के विषयों के प्रश्नपत्र तैयार करेगा। राज्य शिक्षा संस्थान के प्राचार्य ने सोमवार को बोर्ड के सचिव को संतुलित प्रश्नपत्र संग्रह भेंट किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 और राष्ट्रीय आकलन केंद्र परख के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पहल की गई है। समग्र शिक्षा ने 11वीं और 12वीं के इतिहास, नागरिक शास्त्र, भूगोल एवं अर्थशास्त्र विषयों के लिए दिशा–निर्देश तैयार किए हैं। इनका लक्ष्य संतुलित प्रश्नपत्रों का निर्माण करना है।

यह विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ और विश्लेषणात्मक चिंतन का आकलन करेंगे। साथ ही, आलोचनात्मक चिंतन, अनुप्रयोग और समस्या–समाधान कौशल भी परखे जाएंगे। तार्किक अभिव्यक्ति और उच्चतर चिंतन कौशल का मूल्यांकन भी इसमें शामिल है।

बोर्ड के सचिव भगवती सिंह ने बताया कि राज्य शिक्षा संस्थान ने पहली बार प्रश्नपत्र

निर्माताओं को मार्गदर्शन दिया है। यह मार्गदर्शन ऐसे प्रश्न तैयार करने के लिए है जो रटने के बजाय समझने पर जोर दें। विद्यार्थी प्रमाणों और स्रोतों का विश्लेषण कर सकें।

यूपी बोर्ड रू कंपार्टमेंट परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरा

माध्यमिक शिक्षा परिषद की हाईस्कूल इंप्रूवमेंट और इंटरमीडिएट कंपार्टमेंट परीक्षा–2026 की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन सोमवार को पूरा हो गया। बोर्ड के परीक्षकों ने डिजिटल मूल्यांकन के दौरान विशेष सतर्कता बरती। इस वजह से कार्य में सात दिन लगे।

कुल 39543 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन किया गया। यह कार्य प्रयागराज, मेरठ और वाराणसी के केंद्रों पर हुआ। अपर सचिव सत्येंद्र कुमार ने बताया कि इसमें प्रक्रिया पूरी पारदर्शिता से हुई। कॉपियों का ऑफलाइन परीक्षण भी किया जा रहा है।

यूपी बोर्ड रू 10वीं–12वीं व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के आवेदन की समय सारिणी जारी

माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) ने वर्ष–2027 की हाईस्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षाओं के लिए समय सारिणी जारी की है। सारिणी व्यक्तिगत परीक्षार्थियों के आवेदन पत्र वेबसाइट पर अपलोड करने से संबंधित है। अग्रसारण केंद्र को 10 अगस्त तक परीक्षा शुल्क एकमुश्त चालान के माध्यम से कोषागार में जमा करना था।

इसके बाद प्रति परीक्षार्थी 100 रुपये लेट फीस के साथ 16 अगस्त तक परीक्षा शुल्क चालान के माध्यम से कोषागार में जमा कर सकेंगे। शैक्षिक विवरण वेबसाइट पर अपलोड करने की अंतिम तिथि 20 अगस्त है।

सचिव भगवती सिंह के अनुसार, 21 से 31 अगस्त के बीच विवरणों की चेकलिस्ट प्राप्त की जाएगी। अग्रसारण केंद्र की ओर से इन विवरणों की जांच करने की तिथि भी इसी अवधि में निर्धारित की गई है। वेबसाइट पर किसी भी प्रकार का अपडेशन प्रतिबंधित किया गया है।

फूलन देवी की हत्या की सीबीआई जांच कराने की मांग

प्रयागराज। निषाद पार्टी के कार्यकर्ताओं ने सोमवार को डीएम मनीष कुमार वर्मा को पांच सूत्री ज्ञापन सौंपा। उन्होंने सरकार को संबोधित पत्र में पूर्व सांसद फूलन देवी की संपत्ति को माफिया से मुक्त कराकर उनकी मां को सौंपने और फूलन देवी की हत्या की सीबीआई जांच कराने की मांग की। इसके अतिरिक्त, उनके नाम पर महिलाओं के लिए आत्मरक्षा केंद्र खोलने की बात मांग की। फूलन देवी के गांव को आदर्श गांव के रूप में विकसित करने की मांग भी ज्ञापन में शामिल थी।

सावन में शिव की शरण में युवा, भोले की भक्ति में हुए लीन

प्रयागराज। सावन माह में युवा भी भगवान शिव की शरण में हैं। वे अपनी भविष्य के निर्माण के लिए भोलेनाथ की पूजा–अर्चना में लीन हैं। कई युवक और युवतियां सोमवार का व्रत रख रहे हैं। सावन में हाईवे पूरी तरह केसरिया रंग में रंगा है। सावन के सभी चार सोमवार को भक्तों की आस्था सिर चढ़कर बोलती है। युवाओं ने बताया कि भगवान शिव उनके मन में इसलिए बसते हैं, क्योंकि उनका स्वरूप बनावटी नियम का दिखावे का मोहताज नहीं है। शिव अघोरी भी हैं और महायोगी भी।

सोशल मीडिया और लगातार ऑनलाइन रहने की आदत के बीच मंदिरों में समय बिताना, ध्यान करना और शिव भक्ति में शामिल होना, इन युवाओं को खूब भा रहा है। उनके लिए स्क्रीन टाइम से दूरी बनाने का यह एक सहज माध्यम बन रहा है। कई युवा इसे मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन से भी जोड़ रहे हैं।

भगवान शिव हमें सिखाते हैं कि सबकुछ होते हुए भी भीतर से शांत स्थिर और शून्य कैसे रहा जाए? भगवान शिव मेरी श्रद्धा एवं विश्वास मेरी ताकत है। प्रभु शिव पर अगाध आस्था है। मेरे घर में मंदिर जहां शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा हुई है, प्रतिदिन शिव को जल अर्पण करके ही विद्यालय जाता हूं।–सौम्य मिश्र

जेन-जी युवा राजनीतिक पार्टियों के हाथों का खिलौना बनें, बल्कि अपने से जुड़े मुद्दों पर आवाज उठाएं : मायावती

लखनऊ (संवाददाता)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की प्रमुख मायावती ने देश में चल रहे छात्र और युवा आंदोलनों को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों पर निशाना साधा है और युवाओं से अपील की है कि वे उन मुद्दों पर अपनी आवाज उठाएं जो उनसे जुड़े हैं। उन्होंने जेन जी से कहा कि वे राजनीतिक पार्टियों के हाथों का खिलौना न बनें। मंगलवार को यहां एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में मायावती ने आरोप लगाया कि सरकार और विपक्षी पार्टियां, दोनों ही छात्रों की वास्तविक समस्याओं को हल करने के बजाय उनके आंदोलन का इस्तेमाल राजनीतिक फायदे के लिए करने की कोशिश कर रही हैं। उन्होंने कहा कि राजनीतिक पार्टियां, खासकर बीजेपी, कांग्रेस और उनके सहयोगी दल, संसद में अलग-अलग मुद्दों पर हंगामा कर रहे हैं, जिससे जनहित के मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि असली मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने के लिए विरोधी पार्टियों के बीच कोई समझौता भी हो सकता है। युवाओं की चुनौतियों का जिक्र करते हुए मायावती ने कहा कि जेन जी शिक्षा, रोजगार, भर्ती में देरी, पेपर लीक और अनिश्चित भविष्य जैसी चिंताओं से जूझ रही है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक पार्टियों को युवाओं के नेतृत्व वाले विरोध प्रदर्शनों का इस्तेमाल अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए करने के बजाय इन मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए और उन्हें हल करने की कोशिश करनी चाहिए। पेपर लीक और बेरोजगारी को लेकर दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए छात्र विरोध प्रदर्शनों का जिक्र करते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने इस आंदोलन का इस्तेमाल राजनीतिक मकसद के लिए करने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि छात्रों और युवाओं की चिंताएं वास्तविक और गंभीर हैं और ठैच हमेशा उनके साथ खड़ी रही है। उन्होंने छात्रों और युवाओं से लोकतांत्रिक तरीकों से अपनी मांगें उठाना जारी रखने की अपील की, लेकिन साथ ही उन्हें किसी भी राजनीतिक पार्टी का मोहरा बनने से बचने की सलाह भी दी। आरएसएस प्रमुख ने रांची में चल रहे छात्र-युवा आंदोलन पर भी बात की। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और उसके सहयोगी दल छात्रों की चिंताओं का खुलकर समर्थन नहीं कर रहे हैं, जबकि बीजेपी और उसके समर्थक आंदोलन का समर्थन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली और रांची, दोनों जगहों पर छात्रों की चिंताओं पर राजनीतिक हित हावी होते दिख रहे हैं। मायावती ने जोर देकर कहा कि सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों को ही युवाओं की चिंताओं को दूर करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ धीरे-धीरे कम किया जा रहा है और इसके असर को कमजोर करने की कोशिशें की जा रही हैं। साथ ही, उन्होंने कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र को कमजोर किया जा रहा है और निजी क्षेत्र पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियां मजबूत हो रही हैं, जबकि गरीब, बेरोजगार और हाशिए पर रहने वाले वर्ग पीछे छूट रहे हैं। बीएसपी का रुख साफ करते हुए उन्होंने कहा कि पार्टी प्राइवेट सेक्टर के खिलाफ नहीं है, लेकिन वह सरकारी नौकरियों में आरक्षण की तर्ज पर प्राइवेट नौकरियों में भी आरक्षण की वकालत करती है। मायावती ने दावा किया कि जब वह मुख्यमंत्री थीं, तो समाज के सभी वर्गों के साथ निष्पक्ष व्यवहार किया गया और छात्रों की चिंताओं को दूर करने और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने पर विशेष ध्यान दिया गया।

यूपी में 8 चिकित्साधिकारियों के तबादले, वाराणसी से अयोध्या और लखनऊ तक बदले सीएमएस

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश शासन के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने स्वास्थ्य सेवाओं के प्रशासनिक ढांचे में बदलाव करते हुए आठ चिकित्साधिकारियों के तबादले किए हैं। शासन की ओर से जारी आदेश के अनुसार कई सरकारी अस्पतालों में तैनात वरिष्ठ परामर्शदाताओं को मुख्य चिकित्सा अधीक्षक (सीएमएस) की नई जिम्मेदारी सौंपी गई है। नई तैनाती में वाराणसी, अयोध्या, शामली, गोंडा, उन्नाव, हरदोई और लखनऊ के प्रमुख सरकारी अस्पताल शामिल हैं। आदेश के अनुसार डॉ. सत्य प्रकाश मिश्र को पंडित दीन दयाल उपाध्याय राजकीय चिकित्सालय, वाराणसी का मुख्य चिकित्सा अधीक्षक नियुक्त किया गया है। वह अभी तक इसी अस्पताल में वरिष्ठ परामर्शदाता के पद पर कार्यरत थे। वहीं डॉ. प्रवीण रंजन मिश्र को लाल बहादुर शास्त्री चिकित्सालय, रामनगर, वाराणसी का मुख्य चिकित्सा अधीक्षक बनाया गया है। वह इससे पहले इसी अस्पताल में वरिष्ठ परामर्शदाता थे। डॉ. मनोज कुमार अखौरी को जिला संयुक्त चिकित्सालय, शामली का मुख्य चिकित्सा अधीक्षक नियुक्त किया गया है। वह अब तक इसी अस्पताल में वरिष्ठ परामर्शदाता के रूप में जिम्मेदारी संभाल रहे थे। इसी तरह डॉ. अजय मोहन भास्कर को श्रीराम चिकित्सालय, अयोध्या का नया मुख्य चिकित्सा अधीक्षक बनाया गया है। वह वर्तमान में इसी अस्पताल में वरिष्ठ परामर्शदाता के पद पर तैनात थे। शासन के आदेश के मुताबिक डॉ. शम्भू दयाल को जिला महिला चिकित्सालय, गोंडा का मुख्य चिकित्सा अधीक्षक बनाया गया है। वह पहले इसी अस्पताल में वरिष्ठ परामर्शदाता के पद पर कार्यरत थे। वहीं डॉ. प्रमोद कुमार दोहरे को 100 शैय्या संयुक्त चिकित्सालय, बीघापुर, उन्नाव का मुख्य चिकित्सा अधीक्षक नियुक्त किया गया है। वह भी इसी चिकित्सालय में वरिष्ठ परामर्शदाता के रूप में तैनात थे। डॉ. अनिल कुमार शुक्ला को 100 शैय्या संयुक्त चिकित्सालय, हरदोई का मुख्य चिकित्सा अधीक्षक बनाया गया है। वह इससे पहले इसी अस्पताल में वरिष्ठ परामर्शदाता की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। आदेश में डॉ. अमिताभ श्रीवास्तव की भी नई तैनाती की गई है। वह अपर मुख्य चिकित्साधिकारी, लखनऊ के पद पर स्थानांतरणाधीन थे। अब उन्हें लोकबन्धु श्री राजनारायण संयुक्त चिकित्सालय, लखनऊ का मुख्य चिकित्सा अधीक्षक नियुक्त किया गया है। शासन ने तबादला आदेश जारी करते हुए सभी संबंधित चिकित्साधिकारियों को उनकी नई तैनाती वाले स्थान पर कार्यभार ग्रहण करने के निर्देश दिए हैं। इन तबादलों के बाद प्रदेश के कई प्रमुख राजकीय चिकित्सालयों में प्रशासनिक स्तर पर नई कमान संभाली जाएगी।

शैल्बी हॉस्पिटल्स ने गुजरात की पहली टेली रोबोटिक बैरियाट्रिक सर्जरी सफलतापूर्वक पूरी की

लखनऊ (संवाददाता)। रोबोटिक सर्जरी के क्षेत्र में एक अहम उपलब्धि हासिल करते हुए, शैल्बी मल्टी-स्पेशियलिटी हॉस्पिटल्स ने गुजरात की पहली टेली-रोबोटिक बैरिएट्रिक (मेटाबोलिक) सर्जरी सफलतापूर्वक की है। इस सर्जरी में, ऑपरेशन करने वाले सर्जन ने गुरुग्राम से दूर बैठकर रोबोटिक सिस्टम को कंट्रोल किया, जबकि मरीज की सर्जरी अहमदाबाद में हो रही थी। टेली-रोबोटिक बैरिएट्रिक सर्जरी का नेतृत्व शैल्बी हॉस्पिटल्स के कंसल्टेंट लैप्रोस्कोपिक, रोबोटिक, बैरिएट्रिक और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जन डॉ. पराग पटेल ने किया, जिन्होंने गुरुग्राम के एसएस इनोवेशन सेंटर से दूर से ही ऑपरेशन किया। उन्होंने शैल्बी हॉस्पिटल, एसजी हाईवे, अहमदाबाद में बेडसाइड क्लिनिकल टीम के साथ मिलकर काम किया, जिसकी अगुवाई कंसल्टेंट रोबोटिक और लैप्रोस्कोपिक गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल, बैरिएट्रिक और मेटाबोलिक सर्जन डॉ. सौरभ दामानी कर रहे थे। टीम में डॉ. मोहसिना सैय्यद, हार्दिक मैकवान, हार्दिक आचार्य के साथ-साथ पूरी एनेस्थीसिया, नर्सिंग, ऑपरेटिंग थिएटर और टेक्निकल टीमें भी शामिल थीं, जिनके बेहतरीन तालमेल से यह प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी हुई। शैल्बी हॉस्पिटल्स, अहमदाबाद के क्लस्टर सीओओ, श्री परिमल पटेल ने कहारू यह उपलब्धि शैल्बी हॉस्पिटल्स की अपने मरीजों तक नई मेडिकल इनोवेशन पहुँचाने की लगातार कोशिशों को दिखाती है। गुजरात की पहली टेली-रोबोटिक बैरिएट्रिक सर्जरी यह दिखाती है कि कैसे एडवांस्ड टेक्नोलॉजी भौगोलिक बाधाओं को दूर कर सकती है और मरीजों तक एक्सपर्ट सर्जिकल केयर पहुँचा सकती है। हमें विश्वास है कि टेली-रोबोटिक्स विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं की पहुंच को और बेहतर बनाएगी और हमारे नेटवर्क के अधिक से अधिक मरीजों को विश्वस्तरीय रोबोटिक सर्जरी का लाभ मिल सकेगा। भारत में विकसित, सबसे नया रोबोटिक सर्जिकल प्लेटफॉर्म श्एसएसआई मंत्रा 3श, टेली-रोबोटिक्स के जरिए भौगोलिक दूरियों की बाधाओं को खत्म करता है। इससे एक्सपर्ट सर्जन दूर से ही जटिल सर्जरी कर सकते हैं और मरीजों को यात्रा करने की जरूरत नहीं पड़ती। उम्मीद है कि इस उपलब्धि से भारत में शैल्बी के हॉस्पिटल नेटवर्क में एडवांस्ड रोबोटिक सर्जरी की सुविधा ज्यादा लोगों तक पहुँच सकेगी।

सवाल उठाना विपक्ष का अधिकार, जवाब सुनना भी जिम्मेदारी : योगी आदित्यनाथ

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विद्यार्थियों से जुड़े मुद्दे को लेकर कांग्रेस और विपक्ष पर निशाना साधते हुए लोकतंत्र में सवाल पूछने के अधिकार के साथ जवाब सुनने की जिम्मेदारी पर जोर दिया। मुख्यमंत्री ने मंगलवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था नागरिकों और विपक्ष को सवाल उठाने की स्वतंत्रता देती है, लेकिन जब सरकार अपना पक्ष रखने के लिए तैयार हो तो उसका जवाब सुनना भी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी है। सीएम योगी ने कहा कि केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह विद्यार्थियों से जुड़े विषय पर सदन में विस्तार से अपना पक्ष रखने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्होंने कांग्रेस और विपक्ष से अपेक्षा की कि वह तथ्यों का सामना करे, सदन की गरिमा बनाए रखे और सरकार की ओर से दिए जाने वाले जवाब को पूरा सुने। मुख्यमंत्री ने कहा कि लोकतंत्र में किसी भी मुद्दे पर सवाल उठाना और सरकार से जवाब मांगना विपक्ष का अधिकार है। लेकिन सरकार जब उसी विषय पर सदन में अपना पक्ष रखने के लिए तैयार हो, तो उसके जवाब को सुनना भी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी बनती है। उन्होंने कहा कि संसद में स्वस्थ बहस और सार्थक संवाद लोकतंत्र की प्रतिष्ठा को मजबूत करते हैं। योगी ने विपक्ष पर परोक्ष निशाना साधते हुए कहा कि लोकतंत्र में बहस के जरिए प्रतिष्ठा बढ़ती है, उससे बचने से नहीं। उन्होंने कांग्रेस और विपक्ष से राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से आगे बढ़कर तथ्यों के आधार पर चर्चा करने और सदन की मर्यादा बनाए रखने का आग्रह किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार अपना पक्ष रखने के लिए तैयार है और विपक्ष को लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत उस पक्ष को सुनना चाहिए। सीएम योगी ने अपने संदेश के अंत में कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए राहुल,भागना,नहीं हैशटैग का इस्तेमाल किया। मुख्यमंत्री के इस बयान को लेकर विद्यार्थियों से जुड़े मुद्दे पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच जारी राजनीतिक बहस के और तेज होने के संकेत मिल रहे हैं।

भाजपा पूरी तरह से झारखंड के पीड़ित छात्रों के साथ खड़ी : ब्रजेश पाठक

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कांग्रेस नेता और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने राहुल गांधी पर संसद की मर्यादा तार-तार करने, डबल स्टैंडर्ड अपनाने और छात्रों के नाम पर सिर्फ वोटों की राजनीति करने का आरोप लगाया। ब्रजेश पाठक ने स्पष्ट किया कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह विपक्ष के हर सवाल का जवाब देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं, लेकिन कांग्रेस जानबूझकर संसद को चलने नहीं दे रही है। डिप्टी सीएम ने कहा कि राहुल गांधी का मकसद संवाद करना नहीं, बल्कि अराजकता फैलाना है। राहुल गांधी ने पहले मांग की थी कि शिक्षा मंत्री इस्तीफा दें और नीट पर चर्चा हो। जब चर्चा हुई और केंद्र सरकार ने सख्त कानून बनाए, तो राहुल गांधी को चर्चा से कोई मतलब नहीं रहा और उन्होंने तुरंत अपना विषय बदल दिया। ब्रजेश पाठक ने राहुल गांधी को सीधी चुनौती देते हुए कहा राहुल गांधी जी भागना मत! गृह मंत्री हर सवाल का जवाब देंगे। लेकिन कांग्रेस पार्टी संसद चलने ही नहीं दे रही है। ब्रजेश पाठक ने राहुल गांधी के दोहरे रवैये पर सवाल उठाते हुए कहा कि वह बार-बार जंतर-मंतर की घटना को दोहराते हैं, लेकिन झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार (जेएमएम-कांग्रेस गठबंधन) द्वारा छात्रों पर किए गए अत्याचार पर चुप्पी साधे हुए हैं। रांची में शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर वाटर कैनन, आंसू गैस के गोले और भयंकर लाठीचार्ज किया गया। छात्रों के रास्ते में कांटेदार तार लगाए गए। ब्रजेश पाठक ने कहा कि जंतर-मंतर और रांची के प्रदर्शन में जमीन-आसमान का अंतर है। रांची के छात्रों ने बिना किसी गाली-गलौज के शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया, लेकिन उन पर बर्बरता की गई। उन्होंने कहा, 'राहुल गांधी जंतर-मंतर तो जाते हैं, लेकिन रांची जाकर वहां के मुख्यमंत्री से इस्तीफा मांगने की हिम्मत नहीं दिखाते।'ब्रजेश पाठक ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी और केंद्र सरकार पूरी तरह से युवाओं और विद्यार्थियों के साथ खड़ी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद जेन-जी (युवा पीढ़ी) से उनके ही प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया के जरिए सीधा संपर्क साधा और उन्हें भरोसा दिलाया। केंद्र सरकार युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ करने वालों के खिलाफ कड़ा कानून बना रही है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि राहुल गांधी और उनके सहयोगी दल वही लोग हैं जिन्होंने देश में इमरजेंसी (आपातकाल) लगाई थी। अब राहुल गांधी झूठ और अराजकता के नए श्पोस्टर बॉयश बन गए हैं। विपक्ष द्वारा तिरंगा यात्रा पर उठाए जा रहे सवालों पर पलटवार करते हुए डिप्टी सीएम ने कहा कि तिरंगा यात्रा देश के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है, इस पर सवाल उठाना गलत है। उन्होंने अंत में कहा कि भाजपा पूरी तरह से झारखंड के पीड़ित छात्रों के साथ खड़ी है और वहां हुए लाठीचार्ज की कड़े शब्दों में निंदा करती है। राहुल गांधी को अपने इस दोहरे रवैये के लिए देश के युवाओं और विद्यार्थियों से तुरंत माफी मांगनी चाहिए।

ऊर्जा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर टाटा पावर के माइक्रोग्रिड्स ने ग्रामीण भारत तक एकीकृत नवीकरणीय ऊर्जा समाधान पहुंचाए

लखनऊ (संवाददाता)। द टाटा पावर कंपनी लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी टीपी रिन्यूएबल माइक्रोग्रिड लिमिटेड विकेन्द्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा समाधानों के अपने एकीकृत पोर्टफोलियो के जरिए ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सशक्त ग्रामीण समुदायों के निर्माण की दिशा में अपने प्रयासों को और गति दे रही है। टीपीआरएमजी घरों, किसानों और गांव स्तर के उद्यमों को भरोसेमंद और स्वच्छ बिजली उपलब्ध करा रही है। इन समाधानों से कृषि की उत्पादकता बढ़ रही है, जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता घट रही है और ग्रामीण क्षेत्रों में टिकाऊ आजीविका व स्थानीय उद्यमों के लिए नए अवसर तैयार हो रहे हैं। टीपीआरएमजी का एकीकृत मॉडल सौर ऊर्जा आधारित माइक्रोग्रिड, सौर सिंचाई, ऊर्जा कुशल उपकरणों और आजीविका बढ़ाने वाले उपकरणों को एक साथ जोड़कर भारत के दूरदराज गांवों में बदलाव और विकास को नई दिशा दे रहा है। उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले का सुनहरी चौराहा गांव इसका एक आदर्श उदाहरण बन चुका है। कृषि अवशेषों और जैविक कचरे से ऊर्जा उत्पादन पर आधारित बायोएनर्जी समाधानों को भी उन क्षेत्रों में विकसित और लागू किया जा रहा है, जहां उनकी तकनीकी और व्यावसायिक व्यवहार्यता सुनिश्चित है। टीपीआरएमजी के माइक्रोग्रिड ग्रामीण उद्यमों को डीजल आधारित बिजली से हरित और भरोसेमंद ऊर्जा की ओर बढ़ने में मदद कर रहे हैं। विभिन्न व्यवसायों की जरूरतों के अनुरूप तैयार किए गए ये समाधान डीजल की खपत में उल्लेखनीय कमी लाने के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण को भी कम करते हैं। नवीकरणीय ऊर्जा की निरंतर उपलब्धता से ग्रामीण उद्यम अपनी कार्यक्षमता और उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। साथ ही, डीजल से चलने वाली मशीनों की जगह माइक्रोग्रिड से संचालित बिजली आधारित मशीनों का उपयोग करके परिचालन लागत में 20 से 30 प्रतिशत तक की बचत भी कर सकते हैं।

निशानी है रिश्तों की

(छप्पय)

दरवाजे की नीम खटोला दादा जी का।
सुखद सलोनी शाम सुहाना दिन होता था।
लौटाओ वह वक्त जहाँ खुशियाँ रहती थीं।
अपनों के ही साथ सुखद पल को बुनती थीं।
गुजरे पल आते नहीं मत कहना इस बात को।
नूतनता की हर सुबह आती है अहबाब हो।।

दादाजी ने पौध लगाई थी आमों की।
उनकी यह पहचान निशानी है रिश्तों की।
मौसम के अनुरूप सभी को शिक्षा देते।
खुशियाँ लाते वृक्ष नहीं वह कुछ भी लेते।
हरियाली के साथ में चूल्हे की भी आग बन।
प्रकृति-प्रेम की बात कर भूख हरें त्योहार बन।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

वाराणसी में खराब मौसम से दो इंडिगो उड़ानें लखनऊ डायवर्ट

लखनऊ (संवाददाता)। वाराणसी में खराब मौसम के चलते मंगलवार को वाराणसी जाने वाली इंडिगो की दो उड़ानों को लखनऊ डायवर्ट किया गया। दोनों विमान लखनऊ एयरपोर्ट पर सुरक्षित उतरे। एयरलाइन की ओर से यात्रियों को निर्धारित प्रक्रिया के तहत जरूरी सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। इंडिगो की उड़ान 6ई 2442 एनएमआई से वाराणसी जा रही थी। वाराणसी में मौसम खराब होने के कारण विमान को लखनऊ डायवर्ट किया गया। विमान ने दोपहर 1.55 बजे लखनऊ एयरपोर्ट पर सुरक्षित लैंडिंग की। इंडिगो की दूसरी उड़ान 6ई 6805 अहमदाबाद से वाराणसी जा रही थी। खराब मौसम के चलते इसे भी लखनऊ डायवर्ट किया गया। विमान ने दोपहर 1.27 बजे लखनऊ एयरपोर्ट पर सुरक्षित लैंड किया। दोनों उड़ानों के लखनऊ पहुंचने के बाद यात्रियों को आवश्यक सहायता दी जा रही है। मौसम और परिचालन की स्थिति के आधार पर उनकी आगे की यात्रा को लेकर एयरलाइन की ओर से जरूरी कदम उठाए जाएंगे।

सरकार सदन मे जरूरी मुद्दों पर जवाब देने से भाग रही : सुनील सिंह

लखनऊ (संवाददाता)। लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी सुनील सिंह ने संसद की कार्यप्रणाली और देश के मूल मुद्दों को लेकर सरकार पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि आज देश के सामने सबसे बड़ी चुनौतियां किसान, ग्रामीण विकास, युवाओं को रोजगार, बढ़ती बेरोजगारी, महंगाई और आम जनता की आर्थिक परेशानियां हैं, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि जनता से जुड़े इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर संसद में अपेक्षित चर्चा नहीं हो रही है। चौधरी सुनील सिंह ने कहा, "जब संसद में मौजूद 543 सांसदों की आवाज नहीं सुनी जाती, तो 850 सांसदों की आवाज कैसे सुनी जाएगी? लोकतंत्र में केवल जनप्रतिनिधियों की संख्या बढ़ाना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि जरूरी यह है कि प्रत्येक जनप्रतिनिधि की आवाज सुनी जाए और जनता से जुड़े सवालों पर सार्थक बहस हो। उन्होंने कहा कि संसद का समय ऐसे विषयों में व्यर्थ करने के बजाय किसानों की समस्याओं, ग्रामीण विकास, बेरोजगारी, युवाओं के रोजगार, महंगाई और आम नागरिक की आर्थिक परेशानियों पर ठोस चर्चा होनी चाहिए। देश की संसद को जनता की वास्तविक समस्याओं का समाधान तलाशने का मंच बनना चाहिए। चौधरी सुनील सिंह ने कहा संसद जनता की आवाज है। वहां वही मुद्दे प्राथमिकता से उठने चाहिए, जिनसे देश के किसान, मजदूर, युवा और आम नागरिक का भविष्य जुड़ा है। लोकतंत्र की सार्थकता तभी है, जब जनता की आवाज सत्ता तक पहुंचे और उस पर गंभीरता से कार्रवाई हो।

3 सितंबर व्यापारी दिवस के लिए किया आमंत्रित

लखनऊ (संवाददाता)। अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल एवं उत्तर प्रदेश युवा उद्योग व्यापार मंडल के 33 वें स्थापना दिवस पर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में 3 सितंबर व्यापारी दिवस के अवसर पर स्वदेशी व्यापारी कुंभ आयोजित किया जा रहा है। स्वदेशी व्यापारी मंच के तत्वाधान में आयोजित होने वाले इस कुंभ में प्रदेश के समस्त जनपदों का प्रतिनिधित्व होगा। अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल लखनऊ महानगर अध्यक्ष सुरेश छाबलानी ने कैंपल रोड क्षेत्र के जे0 एस0 लॉन में बैठक की और क्षेत्र के समस्त व्यापारियों को 3 सितंबर को बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय में आने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने बताया कि इस स्वदेशी व्यापारिक कुंभ में देश के एक दर्जन से अधिक राज्यों के प्रतिनिधि प्रतिभाग करेंगे। व्यापारियों की एकजुटता को प्रदर्शित करने वाला यह कुंभ ऐतिहासिक होगा बैठक में लखनऊ के महामंत्री अनुज गौतम, दीपेश गुप्ता, सुनीत साहू, कैम्पल रोड के प्रभारी मुकेश साहू, वरिष्ठ व्यापारी जयशंकर खन्ना, पुरुषोत्तम पुरी, संजय वर्मा, रोहित महेश्वरी, आकाश कश्यप, पवन वर्मा, अंचल पुरी, मो. दिलदार, अनवर अहमद सहित कई व्यापारी उपस्थित थे।

थाने से भागा चोर 24 घंटे के अंदर फिर गिरफ्तार

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी के ठाकुरगंज थाने से पुलिस कस्टडी से फरार हुआ चोरी का आरोपी मो. शानू उर्फ समद 24 घंटे के अंदर फिर गिरफ्तार कर लिया गया। सोमवार सुबह करीब 7 बजे शानू ने शौच जाने की बात कही। संतरी ड्यूटी पर तैनात सिपाही अजीत कुमार उसे थाने के शौचालय तक ले गया। इसी दौरान शानू सिपाही को चकमा देकर भाग गया। सिपाही ने करीब 35 मिनट बाद रात्रि अफसर पंकज सिंह को इसकी सूचना दी। इसके बाद पुलिस ने उसकी तलाश शुरू की। पुलिस टीम ने सोमवार देर रात घेराबंदी कर उसे चौपटिया रोड से पकड़ा। आरोपी को 9 अगस्त की रात चोरी के मामले में गिरफ्तार किया गया था। 10 अगस्त की सुबह शौच जाने के दौरान वह सिपाही को चकमा देकर थाने से भाग गया था। आरोपी के फरार होने के मामले में शानू और रिक्रूट सिपाही अजीत कुमार के खिलाफ अलग मुकदमा दर्ज किया गया है। सिपाही पर ड्यूटी में लापरवाही का आरोप है। आरोपी की तलाश के लिए पुलिस की 4 टीमें लगाई गई थीं। पन्नी वाली गली, निवाजगंज चौराहा निवासी सुशीला साहू ने 8 अगस्त को ठाकुरगंज थाने में चोरी की तहरीर दी थी। उन्होंने बताया था कि 7 अगस्त की रात करीब 2.30 बजे चोर छत के रास्ते घर में घुसा और अलमारी में रखी नकदी व ओप्पो मोबाइल चोरी कर ले गया। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और दूसरे सुरागों की मदद से तहसीनगंज निवासी शानू उर्फ मो. समद को पकड़ा था। पुलिस के मुताबिक, उसे 9 अगस्त की रात करीब 11.40 बजे गुलालाघाट इलाके से गिरफ्तार किया गया था।

सम्पादकीय.....

बचाएं बचपन

बच्चों पर सोशल मीडिया की स्वच्छंदता से पड़ने वाले घातक प्रभावों को लेकर भारतीय अभिभावक, शिक्षक व समाजविज्ञानी लंबे अरसे से गंभीर चिंता जताते रहे हैं। यह प्रभाव कितना भयावह व घातक है, ये बात पश्चिमी देशों की सरकारों, समाज व अदालतों को अब समझ में आई है। बच्चे समय से पहले परिपक्व हो रहे हैं। किशोरों की यौन हिंसा और वयस्कों जैसे अपराधों में संलिप्तता, इसके घातक प्रभावों की बानगी है। सोशल मीडिया पर बच्चों की नजर से ऐसे वीडियो गुजरते हैं, जिसमें स्वच्छंद यौन व्यवहार होता है। कुछ लोग व कंपनियां मुनाफे के लिए ऐसे वीडियो अपलोड कर रहे हैं, जो भारतीय संस्कृति में पवित्र माने जाने वाले पारिवारिक रिश्तों, गुरु–शिष्य संबंधों और डॉक्टर मरीज के रिश्तों के वर्जित क्षेत्रों का अतिक्रमण करते नजर आते हैं। अंदाजा लगाना कठिन नहीं है कि कोरी स्लेट जैसे बालमन पर इसका कितना घातक असर पड़ता होगा? उसे पवित्र रिश्तों की दरकन और यौन–स्वच्छंद तथा गंभीर अपराध आम नजर आने लगते हैं। अमेरिका तथा कुछ अन्य विकसित देशों के स्कूलों में दना–दन गोलियां चलाते बच्चे इंटरनेट पर प्रसारित घातक सामग्री देखने से उपजी सनक की ही देन है। निस्संदेह, बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा हेतु डिजिटल दुनिया को साफ–सुथरा रखने की जरूरत है। यही वजह है कि एक अमेरिकी अदालत ने फेसबुक और इंस्टाग्राम की मातृ संस्था मेटा पर 5,390 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। जुर्माना ज्यादा नहीं है क्योंकि पिछले साल कंपनी ने साठ अरब डॉलर का मुनाफा कमाया। दरअसल, मेटा पर जुर्माना लगाने से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि अदालत ने कंपनी को बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिये अपने प्लेटफॉर्म में बदलाव करने को कहा है। दरअसल, न्यू मेक्सिको की अदालत ने स्वीकारा कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिये घातक हैं। उल्लेखनीय है कि अमेरिका के कई राज्यों में सोशल मीडिया कंपनियों के खिलाफ मुकदमें चल रहे हैं। फ्रांस व आस्ट्रेलिया में सोशल मीडिया पर सक्रियता को लेकर बच्चों की उम्र की सीमा तय की गई है। हकीकत यह है कि कंपनी ने ये प्लेटफॉर्म अपने मुनाफे के लिये इस तरह तैयार किए हैं ताकि बच्चों को इसकी लत लग जाए। पिछले दिनों भारत सरकार ने मेटा के अधिकारियों को बुलाकर विरोध जताया था कि उसके एक प्लेटफॉर्म पर बच्चों के यौन शोषण से जुड़े विज्ञापन भारी मुनाफा कमाकर प्रसारित किए गए। अमेरिकी अदालत ने भी माना है कि मेटा के प्लेटफॉर्म बच्चों को यौन शोषण से बचाने में विफल रहे हैं। यही वजह कि कोर्ट ने लगाए गए जुर्माने की राशि का एक भाग ऐसे पीड़ितों को मुआवजे के तौर पर देने के आदेश दिए हैं। समय आ गया है कि सोशल मीडिया कंपनियों को सामाजिक जवाबदेही के लिये बाध्य किया जाए। लेकिन यह नहीं हो कि अमेरिका के बच्चों के लिये अलग कानून और विकासशील व गरीब मुल्कों के बच्चों के लिये अलग कानून हो। हमारी सरकारों को भी इन सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर गैर–कानूनी सामग्री प्रसारित करने के खिलाफ सख्त रवैया अपनाना होगा।

मोदी करते हैं बाबा बागेश्वर की बात, राहुल करते हैं छात्र-युवा की!

शकील अख्तर

नाम बदलने से शहर का मिजाज नहीं बदल जाता। प्रयागराज भी वैसा ही छात्रों की आवाज उठाने वाला हुआ जैसा इलाहाबाद था। राहुल के इस छात्र सम्मेलन की सबसे बड़ी सफलता यह है कि इसने प्रयागराज सहित पूरे यूपी का खासतौर से छात्रों का डर निकाल दिया। हिन्दू–मुसलमान तो प्रधानमंत्री मोदी हर जगह करते हैं मगर यूपी में वे श्मशान–कब्रिस्तान तक पहुंच गए थे। 2017 के विधानसभा चुनाव में वे केवल श्मशान–कब्रिस्तान तक नहीं रुके दीवाली और रमजान तक भी पहुंच गए थे। नतीजा जो वे चाहते थे वह हुआ। साम्प्रदायिकता का जहर ऐसा फैला कि यूपी में बीजेपी की सरकार बन गई। योगी मुख्यमंत्री बने और फिर हिन्दू–मुसलमान की नफरती और विभाजनकारी राजनीति ऐसी बढ़ी कि उसके अलावा यूपी में और कोई मुद्दा ही नहीं रहा। राहुल ने प्रयागराज आकर वापस उन्हीं मुद्दों को फिर से जिन्दा कर दिया जो आम लोगों की वास्तविक जिन्दगी से जुड़े हुए थे और खास तौर से युवा और छात्रों से। हालांकि गोदी मीडिया ने यह सब दिखाया नहीं मगर अब खबर उसकी मोहताज नहीं रही है। डिजिटल मीडिया जिसे लोग आम तौर पर यू ट्यूब कहते हैं से लेकर सोशल मीडिया तक छात्र युवाओं की वह आवाज गुंजने लगी जो राहुल के कार्यक्रम के बाद उनके दिल से निकली थी। अपने दर्द तो उन्होंने कहे ही। ऐसे दर्द जिसे सुनकर किसी का भी कलेजा फट जाए कि नौकरी की तैयारी के लिए यहां घर से दूर रहते हुए एक टाइम खाना खाते हैं। दस रुपए की सब्जी लाते हैं तीन दिन बनाते हैं। नौकरी निकालते नहीं। निकलाते हैं तो एक्जाम नहीं होता। एक्जाम हुआ तो पेपर लीक। 2017 में प्रधानमंत्री ने यूपी को यह श्मशान–कब्रिस्तान से सबसे सस्ता और खराब नशा दिया था। जिसमें सारी नौकरी शिक्षा भविष्य सब डूब गया। अब छात्र इसको समझ गए हैं। इन दस साल में मां–बाप बूढ़े और असक्त हो गए। एक छात्र स्टेज पर राहुल से कह रहा था– मां ने उसकी पढ़ाई और फिर नौकरी की तैयारी के लिए जमीन बेच दी। अब कुछ नहीं है। एक युवा ने कार्यक्रम के बाद बताया कि पिता रिटायर हो गए। घुटनों में दर्द है मगर प्राइवेट काम कर रहे हैं उसे नौकरी मिल जाए इस उम्मीद में। छात्रों के दुखों की कोई पारावार नहीं है। एक छात्र ने स्टेज पर राहुल से कहा कि सुसाइड ही एकमात्र रास्ता है। निराशा का यह आलम। 23 छात्र पहले से कर चुके हैं नीट का पेपर लीक होने पर। राहुल ने फौरन रोका। कहा नहीं वह कोई रास्ता नहीं है। हम मिलकर रास्ते निकालेंगे। हिम्मत रखिए। और वह हिम्मत छात्र युवाओं में आती दिख रही है। एक तरफ जब वे राहुल को स्टेज पर अपनी समस्याएं बता रहे थे। दूसरी तरफ राहुल के इस भरोसे के बाद कि साथ मिलकर लड़ते हुए इन सारी समस्याओं से जीतेंगे। हमने सुबह जानने की कोशिश की कि छात्रों ने जो अपनी वास्तविक समस्याएं राहुल को बताईं है वह कितनी मीडिया के जरिए सामने आ पाईं। तो मालूम पड़ा कि शनिवार को मीडिया को एक और अहम काम में लगना पड़ा कि जहां राहुल ने छात्रों की शिक्षा, नौकरी, भविष्य की बात की वहीं प्रधानमंत्री ने देश के सबसे उच्च शिक्षण संस्थान आईआईटी दिल्ली में बाबा बागेश्वर की। मीडिया को बाबा बागेश्वर का वह हिस्सा छुपाना पड़ा। छात्रों युवाओं में बहुत मजाक उड़ रहा था। मीडिया इसी काम में लगा रहा कि प्रधानमंत्री मोदी के बाबा बागेश्वर के जिक्र के प्रभाव को कैसे कम करे। राहुल की खबर तो वैसे भी नहीं दिखाते हैं। और फिर जब छात्र और युवा भी उनके साथ हों तब तो बिल्कुल नहीं। लेकिन देश को जानना चाहिए। इतनी विपरीत परिस्थितियों में रहने के बावजूद राहुल गांधी का विश्वास था कि भारत के युवा को कोई नहीं रोक सकता। चीन, अमेरिका किसी देश का छात्र युवा भारत की इस नई पीढ़ी के मुकाबले प्रतिभाशाली नहीं है। लेकिन उसे दर्द बहुत दिया गया। बावजूद उसके वह दुनिया में अपना नाम करके दिखाएगी। देश का नाम रोशन करेगी।इस इलाहाबाद के खुद राहुल हैं। नेहरू थे। चन्द्रशेखर आजाद जिन्होंने कहा था– जीते जीते जी मुझे अंग्रेज नहीं पकड़ सकते। यहीं इसी इलाहाबाद में अल्फ्रेड पार्क में चारों तरफ से पुलिस से घिरने के बाद अपनी प्रतिज्ञा निभाते हुए खुद को गोली मार ली थी। निराला, रघुपति सहाय फिराक, महादेवी वर्मा सब इलाहाबाद में ही रहते थे। और जो ये रोज पूछते हैं कि नेहरू क्या थे? तो उसके हजारों जवाबों में से एक यहां का भी है कि नेहरू इन बड़े लेखक शायरों के दोस्त थे। हाय फ्रेन्ड्स कहने वाले मोदी का ऐसा कोई बड़ा दोस्त? माय फ्रेंड ट्रंप को मान लें! नेहरू के महान वैज्ञानिक आइंस्टीन के साथ मित्रता के संबंध थे। अब संसदीय कार्यमंत्री किरन रिजिजू यह न कह दें कि आइंस्टिन से दोस्ती क्यों की हिटलर से क्यों नहीं? इलाहाबाद और नेहरू का जिक्र आ जाए और फिर साहित्य का तो क्या क्या बताएं? प्रेमचंद ने नेहरू की मशहूर किताब ग्लेटरस फ्राम अ फादर टू हिस डाटरय का हिन्दी में अनुवाद किया था। पिता के पत्र पुत्री के नाम से। यहां का विश्वविद्यालय आक्सफोर्ड आफ द ईस्ट (पूर्व का आक्सफोर्ड) कहलाता था। अर्जुन सिंह यहीं पढ़े थे। 2004 में यूपीए की सरकार आने के बाद जब वे मानव संसाधन मंत्री बने तो उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया था। एक वह थे जो छात्रों के हित में विश्वविद्यालय का दर्जा बढ़ाते थे। एक अभी आज के थे जिन्हें अब शिक्षा मंत्री कहा जाने लगा है धर्मेन्द्र प्रधान जिनके इस्तीफे के लिए छात्रों को आंदोलन करना पड़ा। लाठी, आंसूगैस और पैलेट गन के हमले झेलने पड़े। जिन्होंने वहां छह हजार सीटें कम कर दीं। चार सौ प्रतिशत फीस बढ़ा दी। होस्टल की भी फीस बढ़ा दी। लायब्रेरी में पानी भर जाता है। प्रशासन कहता है कि ज्यादा पढ़कर क्या कलेक्टर बनोगे? पीने के पानी में कीड़े! शिकायत करो तो कहते हैं कि यूनिवर्सिटी पानी पीने की जगह नहीं है। यह सब बातें लाइव छात्रों ने स्टेज पर राहुल से कीं। विश्वविद्यालय में लंबे समय से छात्रों का आन्दोलन चल रहा है। अभी दो हफ्ते पहले वहां के छात्रों ने बड़ा प्रदर्शन किया था। सोचिए लायब्रेरी खोलने पीने के पानी जैसे मुद्दों पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय जो पूर्व का आक्सफोर्ड कहलाता था वहां के छात्रों को आन्दोलन करना पड़ रहा है। 25 जुलाई को सुबह से इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र सड़कों पर थे। हजारों छात्र। अब इसे संयोग कहिए या इलाहाबाद का गुरु हथौड़ा हाथ। दोपहर तक धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा हो गया। वहां का पुलिस प्रशासन और राज्य सरकार आज तक हैरान हैं कि अचानक इतने छात्र सड़क पर कैसे निकल पड़े। कोई तैयारी नहीं। किसी बड़े संगठन का आह्वान नहीं।

भक्ति के नाम पर अराजकता कब तक!

हमारे देश में धर्म के नाम पर पाखंड, छल–कपट और टकराव की घटनाएं होती रही हैं, इसके बावजूद समाज में उदारता और सहिष्णुता कायम रही आई। लेकिन धर्म को जब से राज्यसत्ता का खुला प्रोत्साहन और समर्थन मिला है, उसमें बड़ी मात्रा में उग्रता और आक्रामकता का समावेश हो गया है। इसके परिणामस्वरूप धार्मिक क्रिया कलाप विकृत होने लगे हैं। उदाहरण के लिये फिलहाल कांवड़ यात्रा को ही लें। सावन शुरू होते ही धर्मभीरु लोग अपने कंधों पर जल भरे कलश लेकर शिवालयों की ओर कूच करने लगते हैं, इनमें बड़ी तादाद नौजवानों की होती है। धर्मनिरपेक्ष देश की राज्य सरकारें उनके पैरों की मालिश करते नजर आते हैं। कुल मिलाकर कांवड़ियों की यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिये सरकारें वो सारे जतन करती हैं, जो वे कर सकती हैं। फिर भी साल–दर–साल अन्य धार्मिक यात्राओं के विपरीत, कांवड़ यात्रा में अप्रिय दृश्य देखने को मिलते हैं। इस बार तो सावन के पहले दिन से ही जगह–जगह कांवड़ यात्रियों ने उत्पात मचाना शुरू कर दिया। हरिद्वार के बहादराबाद इलाके में कांवड़ से टकरा जाने पर कांवड़ियों ने लाठी–डंडों से हमला कर एक कार को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया, उसमें सवार लोगों के साथ भी मारपीट की। इसी इलाके में कुछ कांवड़ियों ने मामूली सी बात पर मालिश करने वाले एक युवक के साथ जमकर मारपीट की। हरिद्वार–रुड़की राजमार्ग पर कांवड़ियों ने एक कार चालक पर टक्कर मारकर कांवड़ को खंडित करने का आरोप लगाया और बीच सड़क पर भारी बवाल काटा। उन्होंने चालक से जमकर मारपीट की और कार में तोड़फोड़ की। ऐसा ही आरोप लगाकर उन्होंने मुजफ्फरनगर में बाइक सवार को डंडों से पीटा। इसी शहर में एक ट्रक चालक के साथ भी ऐसा ही हुआ।

लघुकथा

अंतसप्रेम

रवि उठा और सीधे माँ के कमरे की ओर भागा। काफी देर हो चुकी थी और घड़ी सुबह के आठ बजा रही थी। माँ तो अवश्य पूजा कर चुकी होगी, सोचते हुए वह रसोई के सामने से गुज़रा तो देखा, छाया भगौने से कप में चाय छान रही थी।

माँ के पैर छूते ही उसकी नजर पास रखे पानी के चमचमाते शीशे के गिलास पर पड़ी, जो पानी से भरा हुआ था। मन शांत हुआ और घबराहट भी दूर हो गई।

वह सोचने लगा, यह कैसा रिश्ता है, जहाँ प्रेम की अभिव्यक्ति गालियों से होती है और दोनों दूर होकर भी कितने करीब हैं। माँ के मानसिक तनाव की दवा छाया ही तो है। गालियाँ बकने के बाद माँ कितनी शांत हो जाती है और छाया भी अपने मायके वालों के विषय में जली-कटी सुनकर क्यों न तुनक जाए? आखिर उनसे उसका खून का रिश्ता है। शायद मैं भी होता तो ऐसा ही करता।

लेकिन छाया भी न जाने किस मिट्टी की बनी है। बिना माँ के उसको चैन नहीं आता और माँ भी तो कितनी बेचैन हो जाती है, जब छाया गालियाँ सुनकर उनके करीब नहीं जाती।

कितनी गालियाँ खाने को मिलती हैं मुझे भी तो... साला जोरू का गुलाम।

एक प्रश्नचिह्न उसके अंतस-पटल पर उभर आया– क्यों देती है गालियाँ, जबकि सारी आशाएँ उसी से हैं?

शायद यही प्रेम की गहरी अभिव्यक्ति है।

रचना सक्सेना
प्रयागराज

उपभोक्तावादी विनाश से आदिवासी आर्थिकी ही बचाएगी

मेरा अध्ययन, पठन–पाठन–लेखन और जीवन का बहुलांश आदिवासी–जनजातीय समाज से जुड़ा है और मैंने पाया है कि

गैर–जनजातीय समाज के साथ–साथ अकादमिक जगत के बड़े हिस्से का इस समाज के प्रति नजरिया पूर्वाग्रहों से भरा है। तमाम आदिवासी समुदायों को एकरूप मानते हुए उन्हें प्रिमिटिव या आदिम (और मन–ही–मन जंगली या असभ्य) मान लिया जाता है। जिक्र उठते ही उनकी आंखों के आगे अतीत में कभी बंदर खाने वाले बिरहोर या अंडमान के जंगलों में नग्न विचरने वाले श्जारवाश लोगों की तस्वीरें कौंध उठती हैं, साथ ही थोड़ी सनसनी, थोड़ी गुदगुदी का भाव भी। एंथ्रोपोलॉजी की पुस्तकों में वर्णित सौ–डेढ़ सौ साल पुरानी तस्वीरें और पॉपुलर मीडिया उनके पूर्वाग्रहों को पुष्ट करते चलते हैं। खेदजनक यह भी है कि अपने पूर्वाग्रहों के कारण या – सरकारी दस्तावेज ही इतिहास लेखन का एकमात्र स्रोत हैं – जैसे सिद्धांतों पर अमल करने के कारण आदिवासी समुदायों का ब्रिटिश–पूर्व इतिहास लिखा ही नहीं गया। मानो वे इतिहासविहीन समुदाय हों। ब्रिटिशकालीन इतिहास लेखन में भी केवल 1767 से 1947 तक के आदिवासी उलगुलानों की क्रांतियों पर बल देते हुए ऐसी अवधारणा बना दी गई कि मानो ये दिन–रात लड़ने–झगड़ने, रक्तपात करने वाले लोग हों। एक और महत्वपूर्ण तथ्य जिस पर (देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय और उनके ग्रंथ लोकायत को छोड़कर) अकादमिक जगत का ध्यान नहीं गया, वह यह है कि इस पूरे भू–भाग में ईसा–पूर्व काल से ही दो मॉडल थेरू पहला,जनजातीय संघों का समतामूलक मॉडल और दूसरा, मगध के नेतृत्व में खड़े हुए साम्राज्य का ब्राह्मणवादी, जन्म आधारित भेदभाववादी मॉडल। अजातशत्रु के षड्यंत्रों के कारण जनजातीय समतामूलक संघों के बज्जी महासंघ की पराजय को हम प्रथम मॉडल के लिए बड़ा धक्के के तौर पर देख सकते हैं। उसके बाद कौटिल्य के अर्थशास्त्र के उद्धरणों में कौटिल्य मगध–साम्राज्य के विस्तार में सबसे बड़ी बाधा जनजातीय संघ को मानते हैं, जिन्हें विखंडित कर दस–दस की संख्या में सुदूर बसाने, कृषि कर्म करवाने तथा पुनरू संगठित न होने देने का उनका संकल्प सामने आता है। गुप्तकाल में ब्राह्मणों को जनजातीय शासकों के क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर किए गए श्ग्रामदानोंश ने भी ब्राह्मणवादी सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना के अबाध प्रसार में महती भूमिका निभाई। आश्चर्य यह है कि गुप्तकाल से आज तक संगठित धर्मों के सांस्कृतिक साम्राज्यवादी कुविचार यह मानकर चल रहे हैं कि आदिवासी समाज एक धर्म–विहीन समाज है और उसे अपने धर्म की परिधि में लाना उनका परम कर्तव्य है। यह पुण्य प्रतापी कार्य सात समुद्र पार की सांस्कृतिक साम्राज्यवादी ताकतों के साथ–साथ स्वदेशी साम्राज्यवादी भी समभाव से किये जा रहे हैं। जिस समुदाय के धार्मिक चिंतन–दर्शन में समस्त जीव–जगत गोत्र के रूप में और वनस्पति–नदियां–पहाड़ पूज्य देवता के रूप में सम्मिलित हो, जहां कृषि कार्य में सहयोगी पशुओं को घर के प्रिय सदस्य के रूप में आदर प्राप्त हो, उसे धर्मदर्शनविहीन मानना कथित मुख्यधारा की बौद्धिक शून्यता नहीं तो और क्या है? प्रकृति पर विजय से प्रारंभ हुई औद्योगिक क्रांति की लहर आज कथित चौथी औद्योगिक क्रांति तक पहुंच गई है। हमारा क्रय और उपभोग ही अर्थव्यवस्थाओं के विकास–मंदी के ग्राफ निर्धारित कर रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था का स्वास्थ्य प्रकृति के सनक भरे दोहन और हमारी भोग की मूल प्रवृत्ति के उद्दीपन पर निर्भर कर दिया गया है, जो हमें तेजी से संपूर्ण प्रकृति–धरती के विनाश की ओर ले जा रही है। ऐसे संकटमय समय में कोई क्योंकि श्आदिवासी आर्थिकीश की चर्चा नहीं करना चाहता, जो–श्प्रकृति से उतना भर लें, जितना हमारी आवश्यकता हैश–जैसे सिद्धांतों पर आधारित हैं? जबकि सारी पूर्वी सभ्यताएं मूलतरू इसी संतोष और संयम पर आधारित रही हैं। कथित मुख्यधारा ने जनजातीय राजवंशों का राजपूतीकरण किया तो जनजातीय देवी–देवताओं का ब्राह्मणीकरण। देउड़ी ग्राम के मुण्डाओं की ग्राम–देवी रांची, तमाड़ की देउड़घि देवी को ब्राह्मणवादी संरचना में सम्मिलित करने का प्रयास सामने चल रहा है।

पुरी के जगन्नाथ भगवान (मूलतरू शबर आदिवासियों के देवता), कामरूप की कामाख्या (खासी समुदाय की देवी), तिरूपति आदि ब्राह्मण देव–श्रेणियों में शामिल किये गए। यानी शंकर, गणेश, कार्तिकेय, हनुमान से लेकर तिरूपति तक आदिवासी देवी–देवता हमारे हुए पर आदिवासी समुदाय नहीं। कोशिश हो कि आदिवासी समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह–दुराग्रह और एकांगी अवधारणा–दृष्टि बदलें, टूटे। जनजातीय राजवंशों पर शोध होय जनजातीय धर्म, दर्शन भी दर्शनशास्त्र के अनुशासन चिंतन–लेखन का हिस्सा बनेंय वैकल्पिक आर्थिकी के तौर पर श्आदिवासी आर्थिकीश पर विमर्श शुरू हो, ताकि आत्ममुग्ध गैर–आदिवासी समाज के माथे से अनावश्यक श्रेष्ठता–बोध का वजन कुछ हल्का हो।

क्या तय समय पर रिलीज हो पाएगी रणबाली ? रश्मिका को लगी चोट से कितना पड़ेगा असर ?

रश्मिका मंदाना इन दिनों घर पर आराम कर रही हैं। बीते दिनों उन्हें एक फिल्म की शूटिंग के दौरान सेट पर चोट लग गई थी, जिससे वह धीरे–धीरे उबर रही हैं। हालांकि, अभी भी बड़ा सवाल यह है कि क्या रश्मिका की इस चोट से उनकी फिल्म रणबाली की रिलीज पर फर्क पड़ेगा? रश्मिका को बीतें दिनों फिल्म श्मैसाश के सेट पर एक डांस सीन फिल्माने के दौरान चोट लगी थी। इसके बाद से ही वे बेड रेस्ट पर हैं। अब गुल्टे की एक रिपोर्ट के मुताबिक, रश्मिका जल्द से जल्द सेट पर लौटकर रणबाली में अपने बचे हुए हिस्से की शूटिंग पूरी करना चाहती हैं, जिससे फिल्म की शूटिंग को समय से पूरा किया जा सके। बीते दिनों एक्ट्रेस ने अपनी चोट की जानकारी सोशल मीडिया के जरिए फैंस को दी थी। उन्होंने पोस्ट में चोट लगने का कारण और स्थिति बताई थी। इसके साथ ही उन्होंने बताया था कि वह घर पर आराम कर रही हैं। राहुल सांकृत्यायन के निर्देशन में बन रही इस फिल्म रश्मिका मंदाना के साथ विजय देवरकोंडा भी लीड रोल में हैं। यह विजय और रशमिका की शादी के बाद साथ में पहली फिल्म होगी।

> “ जिससे फिल्म की शूटिंग को समय से पूरा किया जा सके। बीते दिनों एक्ट्रेस ने अपनी चोट की जानकारी सोशल मीडिया के जरिए फैंस को दी थी। उन्होंने पोस्ट में चोट लगने का कारण और स्थिति बताई थी। इसके साथ ही उन्होंने बताया था कि वह घर पर आराम कर रही हैं।

सिंगर मिलिंद गाबां–प्रिया की शादी में आई दरार! सोशल मीडिया पर दोनों ने किया अनफॉलो, क्या शादी के 4 साल बाद लेंगे

हाल ही में सिंगर मिलिंद गाबा काफी सुर्खियों में आ गए हैं। इस बार उनके चर्चा की वजह प्रोफेशनल लाइफ नहीं बल्कि पर्सनल लाइफ है। हुआ कुछ यूं कि उनकी पत्नी प्रिया बेनीवाल और मिलिंद गाबा ने एक–दूसरे को सोशल मीडिया पर अनफॉलो कर दिया है। इस वज2ह से फैंस ने अंदाजा लगाना शुरू कर दिया है कि उनकी शादी में दरार आ गई है। हालांकि दोनों में से किसी ने भी इस बात की खुद पुष्टि नहीं की है। आपको बता दें कि सिंगर और प्रिया की शादी 16 अप्रैल, 2022 को हुई थी। इस दौरान उनके परिवार के कुछ खास लोग और दोस्त की मौजूद थे। अक्सर दोनों सोशल मीडिया पर अपनी तस्वीरें शेयर करते रहते थे। दोनों की शादी को 4 साला हो चुके हैं और अब उनकी तलाक की खबरों ने सबको चिंता में डाल दिया है। ऐसी अफवाहों ने हवा तब पकड़ी जब दोनों ने सोशल मीडिया पर एक–दूसरे को हटा दिया। इसे देखने के बाद बाद सोशल मीडिया पर उनके तलाक की खबरें काफी वायरल हो रही हैं। इतना ही नहीं सिंगर ने अपने अकाउंट से सारी शादी की तस्वीरें भी हटा दी हैं। अब उनके अकाउंट पर सिर्फ 11 पोस्ट हैं, वो भी उनकी नई एल्बम की। एक बार मिलिंद ने बताया था कि प्बजी गेम खेलते दौरान ही दोनों की मुलाकात हुई थी। एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा, वह इस गेम में नई थीं और हम गेम के प्रति अपने साझा लगाव की वजह से मिले। मैंने उनके भाई हर्ष बेनीवाल के साथ काम किया था, हमने बातचीत और मुलाकातें शुरू कीं, और हमारे आस–पास के सभी लोगों को हमारी बॉन्डिंग पसंद आई। इसके बाद 2025 के फरवरी महीने में दोनों ने प्रेगनेंसी की घोषणा की थी और मई महीने में दोनों ने जुड़वा बच्चों का स्वागत किया।

`कर गई चुल्ल' फेम सिंगर सुकृति कक्कड़ ने की सगाई, शौमिक शेट्टी ने घुटनों पर बैठकर पहनाई अंगूठी

'कर गई चुल्ल' फेम सिंगर ने अपने बॉयफ्रेंड और बिजनेसमैन शौमिक शेट्टी से सगाई कर ली है। सुकृति ने सोशल मीडिया पर अपनी ड्रीमी प्रपोजल की तस्वीरें शेयर कर इस खास पल की झलक फैंस को दिखाई है। सुकृति कक्कड़ ने इंस्टाग्राम पर अपनी सगाई की कुछ खूबसूरत तस्वीरें शेयर की हैं। पहली तस्वीर में सुकृति काफी खुश नजर आ रही हैं, जबकि शौमिक उनके सामने घुटनों पर बैठकर उन्हें अंगूठी पहनाते दिख रहे हैं। इस खास प्रपोजल के पीछे हरे–भरे मैदानों का खूबसूरत नजारा दिखाई दे रहा है। बाकी तस्वीरों में दोनों प्रपोजल के बाद साथ में रोमांटिक पल बिताते नजर आ रहे हैं। एक तस्वीर में दोनों शानदार नजारे के सामने डिनर डेट एंजॉय करते भी दिख रहे हैं। सुकृति ने तस्वीरों में अपनी खूबसूरत डायमंड एंगेजमेंट रिंग भी फ्लॉन्ट की है। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए सुकृति ने बेहद प्यारा कैप्शन लिखा– 'आज, कल और हमेशा।' इसके साथ उन्होंने हार्ट और रिंग वाली इमोजी भी लगाई। उन्हें फिल्म 'कपूर एंड संस' के गाने 'कर गई चुल्ल' से काफी पॉपुलैरिटी मिली थी। वह वेलनेस, हॉस्पिटैलिटी और लग्जरी एक्सपीरियंस से जुड़े बिजनेस में काम करते हैं। उनके लिंक्डइन प्रोफाइल के मुताबिक, शौमिक मुंबई में लग्जरी पैडल क्लब कोर्टसाइड के को–फाउंडर हैं।

2026 में धमाल मचाने वाली एक्टर–डायरेक्टर की जोड़ियां, जिन्होंने दीं साल की बड़ी फिल्में

इस साल बॉलीवुड में कई बड़ी फिल्में रिलीज हुई हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस के साथ–साथ ओटीटी पर भी अपनी खास पहचान बनाई। एक्शन और देशभक्ति से लेकर कोर्टरूम ड्रामा और इमोशनल कहानियों तक, अलग–अलग जॉनर की फिल्मों ने दर्शकों का ध्यान खींचा। वहीं, इन फिल्मों की सफलता के पीछे कई ऐसी एक्टर–डायरेक्टर जोड़ियां भी रहीं, जिन्होंने अपनी बेहतरीन केमिस्ट्री और शानदार कहानी कहने के अंदाज से दर्शकों को प्रभावित किया। तो चलिए नजर डालते हैं उन फिल्मकारों और उनकी फिल्मों पर, जिन्होंने 2026 में अपनी छाप छोड़ी।

1. सिद्धार्थ पी. मल्होत्रा : 'इक्का'

सिद्धार्थ पी. मल्होत्रा ने 'इक्का' के साथ इस साल की चर्चित स्ट्रीमिंग फिल्मों में अपनी जगह बनाई। नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई इस कोर्टरूम ड्रामा में भावनात्मक कहानी के साथ दमदार अभिनय और रोमांचक नैरेटिव देखने को मिला। फिल्म की कहानी ने दर्शकों को शुरुआत से अंत तक जोड़े रखा। सिद्धार्थ पी. मल्होत्रा ने एक बार फिर यह दिखाया कि वह मजबूत कंटेंट और एंटरटेनमेंट के बीच अच्छा संतुलन बनाने की क्षमता रखते हैं।

2. आदित्य धर : 'धुरंधर'

आदित्य धर ने 'धुरंधर' के साथ एक बार फिर बड़े पर्दे पर अपनी ब्लॉकबस्टर क्षमता साबित की। बड़े स्तर पर तैयार की गई इस एक्शन फिल्म में हाई–ऑक्टेन एक्शन, शानदार तकनीकी काम और महत्वाकांक्षी कहानी देखने को मिली। फिल्म को दर्शकों के बीच जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली और यह 2026 की बड़ी थिएट्रिकल सफलताओं में शामिल हुई। आदित्य धर की निर्देशन शैली और फिल्म का भव्य स्केल इसकी सबसे बड़ी खासियतों में से एक रहा।

3. अनुराग सिंह : 'बॉर्डर 2'

अनुराग सिंह ने 'बॉर्डर 2' के जरिए हिंदी सिनेमा की लोकप्रिय वॉर फ्रेंचाइजी को एक बार फिर बड़े पर्दे पर पेश किया। फिल्म में देशभक्ति, भावनाओं और बड़े पैमाने पर फिल्माए गए एक्शन का शानदार मेल देखने को मिला। दमदार कहानी और युद्ध के दृश्यों ने दर्शकों को प्रभावित किया। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर भी अच्छा प्रदर्शन किया और 2026 की चर्चित हिंदी फिल्मों में अपनी जगह बनाई।

4. इम्तियाज अली : 'मैं वापस आऊंगा'

इम्तियाज अली अपनी फिल्मों में रिश्तों और भावनाओं को गहराई से दिखाने के लिए जाने जाते हैं। 'मैं वापस आऊंगा' के साथ उन्होंने एक बार फिर अपनी खास कहानी कहने की शैली को पर्दे पर पेश किया। फिल्म की भावनात्मक कहानी, प्रभावशाली अभिनय और किरदारों के बीच की केमिस्ट्री ने इसे खास बनाया। इम्तियाज ने एक बार फिर साबित किया कि उनकी फिल्मों में कहानी और भावनाओं का मजबूत कनेक्शन दर्शकों को लंबे समय तक याद रहता है।

संजय लीला भंसाली के सिनेमा के 30 साल, इन 8 फिल्मों ने रचा यादगार सफर

तीस साल पहले, एक सिनेमाई जीनियस का जन्म हुआ जब संजय लीला भंसाली ने खामोशीरू द म्यूजिकल के साथ अपना डायरेक्टोरियल डेब्यू किया, यह एक ऐसे सफर की शुरुआत थी जिसने भारतीय सिनेमा के प्यार, चाहत, त्याग और महत्वाकांक्षा की कहानियों को कहने के तरीके को फिर से परिभाषित किया। तीन दशकों में, उनके कामों ने दर्शकों को ऐसी दुनिया में पहुँचाया है जो शानदार होने के साथ–साथ बहुत इमोशनल भी है, जहाँ म्यूजिक याद बन जाता है, कॉस्ट्यूम कैरेक्टर बन जाते हैं और हर फ्रेम में उसके बनाने वाले की साफ छाप होती है। यादगार रोमांस से लेकर बड़े ऐतिहासिक ड्रामा और असाधारण महिलाओं की कहानियों तक, भंसाली अपने खास विजन पर कायम रहते हुए लगातार आगे बढ़े हैं। सिनेमा में उनके 30 साल पूरे होने पर, यहाँ आठ काम हैं जो उनके शानदार सफर के सबसे खास चौप्टर में से हैं।

हम दिल दे चुके सनमः जब प्यार ने अपने कई रंग पाए

हम दिल दे चुके सनम, प्यार, रिश्तों और कुर्बानी पर भंसाली की सबसे पसंदीदा खोजों में से एक है। सलमान खान, ऐश्वर्या राय बच्चन और अजय देवगन स्टारिंग इस फिल्म ने रोमांस, परिवार, परंपरा और दिल टूटने को जीवंत कल्चरल माहौल में एक साथ दिखाया। लेकिन इसके रंग और म्यूजिक के नीचे एक गहरी इमोशनल कहानी थी जो यह समझने के बारे में थी कि प्यार का असली मतलब क्या है। भंसाली की म्यूजिक को कहानी का हिस्सा बनाने की काबिलियत पहले से ही साफ थी, गाने किरदारों की इमोशनल जर्नी का एक अहम हिस्सा बन गए। फिल्म ने एक ऐसा टेम्पलेट बनाया जो गहरी इंसानी भावनाओं से जुड़े शानदार विजुअल्स के साथ भंसाली के सिनेमा का सेंटर बन गया।

देवदासः जब शान कविता बन गई

देवदास के साथ, भंसाली ने भारतीय साहित्य के सबसे मशहूर दुखद रोमांस में से एक को एक ऐसे सिनेमाई तमाशे में बदल दिया जैसा दर्शकों ने पहले कभी नहीं देखा था। शाहरुख खान, ऐश्वर्या राय बच्चन और माधुरी दीक्षित ने इस नाकाम लव स्टोरी में गहराई और कमजोरी लाई, जबकि भंसाली ने बड़े सेट, कॉस्ट्यूम, म्यूजिक और कोरियोग्राफी की एक शानदार दुनिया बनाई। फिर भी देवदास कभी भी सिर्फ दिखावे के लिए नहीं थी। हर बड़े फ्रेम में किरदारों की इमोशनल उथल–पुथल दिखती थी। यह फिल्म इंडियन सिनेमा में एक मील का पत्थर बन गई और इसने भंसाली की दिल टूटने को विजुअल पोएट्री में बदलने की जबरदस्त काबिलियत को दिखाया।

ब्लैकः अंधेरे में खूबसूरती ढूंढना

ब्लैक के साथ, भंसाली अपने सिनेमा से जुड़ी पारंपरिक शान से हटकर एक ज्यादा गहरी, ज्यादा गहरी इमोशनल दुनिया में चले गए। मिशेल, एक जवान बहरी लड़की, और देबराज, एक टीचर जो उसे उसकी सीमाओं से परे एक दुनिया खोजने में मदद करता है, की कहानी को रानी मुखर्जी और अमिताभ बच्चन की शानदार एक्टिंग ने जिंदा कर दिया। फिल्म ने हिम्मत, शिक्षा, कम्युनिकेशन और इंसानी जज्बे को दिखाया, जिससे यह साबित हुआ कि भंसाली की सिनेमाई ताकत सिर्फ बड़े पैमाने पर निर्भर नहीं करती। ब्लैक ने खामोशी, अंधेरे और सबसे छोटे इमोशनल पलों में भी खूबसूरती खोजने की उनकी काबिलियत दिखाई।

गोलियों की रासलीला राम–लीलाः बिना रोक–टोक का प्यार

गोलियों की रासलीला राम–लीला के साथ, भंसाली रोमांस में लौटे लेकिन उसे पूरी तरह से नई एनर्जी दी। गुजरात के शानदार बैकग्राउंड पर बनी यह फिल्म शेक्सपियर से प्रेरित रोमांस को रंग, संगीत, दुश्मनी और जुनून के साथ जोड़ती है। रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण ने स्क्रीन पर एक जबरदस्त केमिस्ट्री दिखाई, जबकि भंसाली ने एक ऐसी दुनिया बनाई जहाँ प्यार और हिंसा साथ–साथ थे। इस फिल्म ने भंसाली के सबसे मशहूर एक्टर–डायरेक्टर कोलेबोरेशन में से एक की शुरुआत की और रोमांस को फिर से साबित किया, जबकि इसके इमोशनल कोर को बहुत ज्यादा पर्सनल रखा।

बाजीराव मस्तानीः दुनिया के खिलाफ प्यार

बाजीराव मस्तानी में भंसाली ड्यूटी, पावर, समाज और परंपरा के बीच फंसे प्यार की कहानी के साथ इतिहास में लौटे। रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण और प्रियंका चोपड़ा जोनास मराठा साम्राज्य की दुनिया में रहते हैं, जो नामुमकिन फैसलों से बनी कहानी में कॉम्प्लेक्सिटी और इमोशनल गहराई लाते हैं। इस फिल्म में भंसाली ने अपने सबसे बड़े विजुअली एम्बिशियस अंदाज में दिखाया, जिसमें बड़े सेट, कॉस्ट्यूम, म्यूजिक और कोरियोग्राफी ने एक बहुत बड़े लेवल की दुनिया बनाई। लेकिन इसके दिल में एक बहुत ही पर्सनल कहानी थी, जो प्यार और जिम्मेदारी के बीच बँटे एक आदमी की थी। बाजीराव मस्तानी ने एक बार फिर साबित कर दिया कि भंसाली इतिहास को कुछ तुरंत, इमोशनल और बहुत ज्यादा सिनेमैटिक बना सकते हैं।

पद्मावतः हिम्मत और सम्मान की एपिक

पद्मावत के साथ, भंसाली ने एक और बड़ी हिस्टोरिकल एपिक बनाई, इस बार रानी पद्मावती के लेजेंडरी किरदार के आस–पास। दीपिका पादुकोण, शाहिद कपूर और रणवीर सिंह ने हिम्मत, सम्मान, जुनून और ताकत से बनी एक शानदार विजुअली कहानी को लीड किया। फिल्म ने अपने शानदार प्रोडक्शन डिजाइन से लेकर अपने बड़े कॉस्ट्यूम और यादगार म्यूजिकल सीक्वेंस तक, भंसाली की स्केल पर मास्टरी दिखाई। फिर भी, पद्मावत को जो चीज खास तौर पर खास बनाती थी, वह थी।

राजस्थान की फेमस नागौरी दाल तड़का बनाने की आसान सी रेसिपी, बढ़ जाएगा डिनर का स्वाद

राजस्थान की बहुत सारी डिश फेमस है। जिसे लोग खाना पसंद है। इसी लिस्ट में शामिल है नागौरी दाल तड़का, जिसका स्वाद लोगों को जुबान पर चढ़ जाता है। अगर डिनर में कुछ स्पेशल बनाने का मन है तो बिना ज्यादा मेहनत के फटाफट नागौरी दाल तड़का बनाकर रेडी करें। ये चावल, रोटी या पराठा हर किसी के साथ टेस्टी लगती है। जानें क्या है नागौरी दाल तड़का बनाने की इजी रेसिपी।

नागौरी दाल तड़का बनाने की सामग्री

1 कप मसूर की दाल
आधा कप मूंग की दाल
एक चम्मच हल्दी पाउडर
नमक स्वादानुसार
एक चम्मच जीरा
एक चम्मच सौंफ
सूखी साबुत लाल मिर्च
धनिया की पत्तियां
बारीक कटे 2 प्याज
कसूरी मेथी
कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर
अमचूर पाउडर एक चम्मच
पानी दो कप

नागौरी दाल तड़का बनाने की रेसिपी

सबसे पहले मसूर और मूंग की दाल को अच्छी तरह से धोकर करीब आधे घंटे के लिए भिगोकर रख दें। फिर इन दोनों भीगी दाल के पानी को छानकर प्रेशर कूकर में डालें। दो कप पानी, नमक और हल्दी पाउडर डालें। थोड़ा सा तेल डालें और सीटी लगा दें। दो से तीन सीटी बजने के बाद गैस की फ्लेम को बंद कर दें।

करें तड़के की तैयारी

तड़का लगाने के लिए पैन या कड़ाही लें। उसमे तेल डालकर गर्म करें। जब तेल गर्म हो जाए तो जीरा चटकाएं। साथ में सौंफ और साबुत लाल मिर्च भी डालें। हींग डालकर बारीक कटा प्याज डालें। अच्छी तरह से सुनहरा होने तक भूनें। जब प्याज सुनहरा होने लगे तो इसमे बारीक कटी धनिया हरा मिर्चा, कश्मीरी लाल मिर्च और कसूरी मेथी डालें। साथ में अमचूर पाउडर डालकर पकी हुई दाल को मिला दें। अच्छी तरह मिक्स करें और बस रेडी है टेस्टी नागौरी दाल तड़का। इसे चावल, रोटी या पराठा के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

काले रंग होने के कारण पति को ताने मारती थी पत्नी, कोर्ट ने क्रूरता मानते हुए तलाक की दी मंजूरी

कर्नाटक उच्च न्यायालय ने कहा कि अपने पति की त्वचा का रंग "कालाश्ह होने के कारण उसका अपमान करना क्रूरता है तथा यह उस व्यक्ति को तलाक की मंजूरी दिए जाने की ठोस वजह है। उच्च न्यायालय ने 44 वर्षीय व्यक्ति को अपनी 41 वर्षीय पत्नी से तलाक दिए जाने की मंजूरी देते हुए हाल में एक फैसले में यह टिप्पणी की। अदालत ने कहा कि उपलब्ध साक्ष्यों की बारीकी से जांच करने पर निष्कर्ष निकलता है कि पत्नी काला रंग होने की वजह से अपने पति का अपमान करती थी और वह इसी वजह से पति को छोड़कर चली गयी थी। उच्च न्यायालय ने हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 13(1)(ए) के तहत तलाक की याचिका मंजूर करते हुए कहा– "इस पहलू को छिपाने के लिए पत्नी ने पति के खिलाफ अवैध संबंधों के झूठे आरोप लगाए। ये तथ्य निश्चित तौर पर क्रूरता के समान हैं।श बेंगलुरु के रहने वाले इस दंपति ने 2007 में शादी की थी और उनकी एक बेटी भी है। पति ने 2012 में बेंगलुरु की एक पारिवारिक अदालत में तलाक की याचिका दायर की थी। महिला ने भी भारतीय दंड संहिता की धारा 498ए (विवाहित महिला से क्रूरता) के तहत अपने पति तथा ससुराल वालों के खिलाफ एक मामला दर्ज कराया था। उसने घरेलू हिंसा कानून के तहत भी एक मामला दर्ज कराया और बच्ची को छोड़कर अपने माता–पिता के साथ रहने लगी। उसने पारिवारिक अदालत में आरोपों से इनकार कर दिया और पति तथा ससुराल वालों पर उसे प्रताड़ित करने का आरोप लगाया। पारिवारिक अदालत ने 2017 में तलाक के लिए पति की याचिका खारिज कर दी थी जिसके बाद उसने उच्च न्यायालय का रुख किया था। न्यायमूर्ति आलोक अराधे और न्यायमूर्ति अनंत रामनाथ हेगड़े की खंडपीठ ने कहा– "पति का कहना है कि पत्नी उसका काला रंग होने की वजह से उसे अपमानित करती थी। पति ने यह भी कहा कि वह बच्ची की खातिर इस अपमान को सहता था।" उच्च न्यायालय ने कहा कि पति को "काला" कहना क्रूरता के समान है। उसने पारिवारिक अदालत के फैसले को रद्द करते हुए कहा– "पत्नी ने पति के पास लौटने की कोई कोशिश नहीं की और रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्य यह साबित करते हैं कि उसे पति का रंग काला होने की वजह से इस शादी में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

बिस्तर पर लेटे-लेटे करें ये स्ट्रेचिंग, एक बार में खुलेगी नींद और रहेंगे एनर्जेटिक

सुबह आंख खुलती ही कई लोग तो सुबह के समय थकावट महसूस करते हैं। अगर आप भी सुबह उठकर लो एनर्जी महसूस करते हैं, तो आपको अपने दिन की शुरुआत करने का तरीका बदलना चाहिए। अगर आप सुबह उठते ही अपने कामों में लग जाते हैं तो अब से बिस्तर से उठने से पहले अपने शरीर और दिमाग को फिट रखने के लिए कुछ स्ट्रेचिंग को शामिल करें। ऐसा करने से आपको बेहतर महसूस करने में मदद मिलेगी। यहां जानिए ऐसी स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज के बारे में जिसे आप बिस्तर पर लेटे–लेटे आराम से कर सकते हैं।

मॉर्निंग स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज

पहले करें ये काम

स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज शुरू करने से पहले वॉर्मअप करना जरूरी है। इसे करने से पहले अपने चादर और कंबल को हटा दें और सीधे लेट जाएं। फिर पैरे और हाथों को सीधा रखें, हथेली और पंजों को आगे की ओर खीचें और फिर शरीर में खींचाव महसूस करें। कुछ देर सा करने के बाद शरीर के निचले अंगों को मोड़ें। अपने घुटनों और पैरों को हवा में रखें। अपने घुटनों को हवा में रखते हुए, अपने पैरों को ऊपर और नीचे करें। बाद में अपनी एड़ियों को मोड़ें और उन्हें आगे–पीछे करें। फिर बिस्तर पर बैठ जाएं। धीरे–धीरे बाएं और फिर दाएं देखें। अपने कंधों को कुछ बार घुमाएं, दोनों हाथों को अपने सामने रखें, फिर हाथ मोड़ें और कंधों को छुएं। ऐसा 10 बार करें। फिर अपनी कलाइयों को ऊपर और नीचे मोड़ें, इसी के साथ अपने हाथों को कई बार खोलें और बंद करें।

यूं करें शुरु

सिंगल घुटनों को खींच कर स्ट्रेचिंग शुरू करें। इसके लिए अपने पैरों को फैलाकर अपनी पीठ के बल लेटें और अपने बाएं घुटने को मोड़ें। अपनी बायीं जांघ के पिछले हिस्से को पकड़ें और अपने घुटने को अपनी छाती की ओर खींचें। इस दौरान अपने दाहिने पैर पर खिंचाव महसूस करें, इसके लिए उस पैर की जांघ और पिंडली को बिस्तर की ओर दबाएं।कुछ सेकेंड रुक कर शुरुआती पॉजिशन में लौटें और दूसरे पैर से दोहराएं।

इस स्ट्रेच को करने के लिए अपने पैरों को फैलाकर दाहिनी ओर लेटें। अपने दाहिने हाथ को अपने सिर के नीचे रखें। फिर अपने बाएं घुटने को मोड़ें और अपनी एड़ी को अपने बाएं नितंब की ओर लाएं, अपने बाएं हाथ से पीछे अपने पैर को पकड़ें। अपनी जांघ और कूल्हे के सामने खिंचाव महसूस करें। फिर बाईं ओर मुड़ें और एक्सरसाइज दोहराएं।

पूरी बॉडी की स्ट्रेचिंग करने के लिए सांस लेते हुए, अपने हाथों को ऊपर की ओर करें और उंगलियों को एक साथ पकड़ें। हथेलियों को सिर के पीछे की दीवार की ओर मोड़ें और हथेलियों को अपने से दूर धकेलें। इसी समय, अपने घुटनों को सीधा रखते हुए पैर की उंगलियों को बाहों से दूर ले जाएं।कुछ देर होल्ड करें और फिर सांस छोड़ें और स्ट्रेच को छोड़ दें।

दिमाग को शार्प बनाना है तो इन कामों को करना कभी ना छोड़े, बुढ़ापे में नहीं होगी समस्या

स्टडी में इस बात का खुलासा हो चुका है कि फिजिकल एक्सरसाइज के साथ ही दिमाग को शार्प और एक्टिव बनाने की जरूरत हमेशा होती है। जिससे कि बुढ़ापे में अल्जाइमर और पार्किंसन जैसी दिमाग से जुड़ी परेशानियां परेशान ना करें। अक्सर देखा गया है कि उम्र बढ़ने के साथ याददाश्त कमजोर हो जाती है और रोजमर्रा की चीजें याद रखने में भी मुश्किल होती है। ऐसे में जरूरी है कि दिमाग की भी एक्सरसाइज की जाए। फिजिकल एक्सरसाइज दिमाग में ब्लड का फ्लो अच्छा बना रहता है। वहीं रेगुलर मेंटल और फिजिकल एक्सरसाइज स्ट्रेस लेवल और एंजायटी को भी कम करने में मदद करते हैं। स्ट्रेस और डिप्रेशन जैसी मेंटल बीमारियां याददाश्त को कमजोर कर देती हैं। इनसे बचने के लिए ब्रेन को एक्टिव रखना जरूरी है। ब्रेन एक्टिव रखने के लिए इन कामों को करना बंद ना करें।

हमेशा कुछ नया सीखते रहें

सीखने की उम्र नहीं होती। इस बात को हमेशा दिमाग में रखें और कुछ ना कुछ नया सीखते रहें। लाइफ में लर्निंग प्रोसेस को बंद कर देने से ब्रेन की एक्टीविटी रुक जाती है और कुछ समय बाद दिमाग ठीक तरीके से काम करना बंद कर देता है।

वीडियो गेम्स खेलें

वीडियो गेम्स बच्चों का फेवरेट होता है लेकिन क्या आप जानते हैं कि वीडियो गेम्स को खेलने से दिमाग एक्टिवेट होता है। मोबाइल गेम्स या वीडियो गेम्स खेलते रहना दिमाग को फिट रखता है। हालांकि इसे खेलने का टाइम और दिन फिक्स कर लें। जिससे कि वीडियो गेम्स आपकी लाइफ में नुकसान ना करे।

मेंटल एक्सरसाइज वाले गेम खेलें

पजल, चेस, क्रॉसवर्ड और ऐसे काम को दिमाग को बिजी रखते हैं। उन्हें हमेशा करते रहने की कोशिश करनी चाहिए। लिखना और पढ़ना भी मेंटल एक्सरसाइज में ही शामिल है।

फिजिकल एक्सरसाइज को ना भूलें

फिजिकल वर्कआउट केवल शरीर के लिए ही जरूरी नही है बल्कि ये दिमाग की अच्छी सेहत के लिए भी जरूरी है। इसलिए फिजिकल एक्सरसाइज को लाइफ में कतई इग्नोर ना करें।

दिमाग को बूस्ट करने के लिए इन 3 कामों को भी कर सकते हैं।

म्यूजिक सुनें

म्यूजिक मानसिक शांति के लिए बहुत जरूरी है। यहीं नहीं मनचाहा इंस्ट्रूमेंट बजाने से भी मेंटल हेल्थ अच्छी रहती है।

मेडिटेशन करें

रेगुलर मेडिटेशन करने से मेंटल हेल्थ सही रहती है और स्ट्रेस, एंजायटी, डिप्रेशन जैसी समस्याओं से छुटकारा मिलता है। मेडिटेशन करने से दिमाग शांत, स्थिर रहता है और याददाश्त तेज रहती है।

नींद है जरूरी

रोजाना कम से कम 7–8 घंटे की नींद बहुत जरूरी है। हर दिन इससे कम नींद दिमाग की सेहत पर बुरा असर डालती है। नींद दिमाग को एक तरह से रिचार्ज करने का काम करती है। इसलिए सोना जरूरी है।

कौन हैं भद्रा! जिनके समय नहीं बांधी जाती राखी, जानें क्यों शुभ काम में आती है बाधा

रक्षाबंधन भाई–बहन के प्रेम और विश्वास का पर्व है। इस दिन बहनें भाई की कलाई पर राखी बांधकर उसकी लंबी उम्र, सुख–समृद्धि और मंगलमय जीवन की कामना करती हैं। लेकिन राखी बांधने से पहले पंचांग में भद्रा काल का विचार करने की परंपरा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भद्रा के दौरान राखी बांधना और अन्य मांगलिक कार्य करना शुभ नहीं माना जाता। आखिर भद्रा क्या है? इसे अशुभ क्यों माना जाता है? भद्रा का संबंध किससे है और रक्षाबंधन पर इसके दौरान राखी बांधने की मनाही क्यों है? आइए जानते हैं भद्रा से जुड़ी धार्मिक मान्यताओं और ज्योतिषीय महत्व के बारे में।

क्या है भद्रा?

ज्योतिष और हिंदू पंचांग में भद्रा को विष्टि करण के नाम से जाना जाता है। करण तिथि का आधा भाग होता है और पंचांग में कुल 11 करण माने जाते हैं, जिनमें विष्टि करण को भद्रा कहा जाता है। पंचांग की गणना के अनुसार भद्रा एक निश्चित अवधि के रूप में आती है। धार्मिक परंपरा में इस समय को शुभ और मांगलिक कार्यों के लिए अनुकूल नहीं माना जाता। इसी वजह से विवाह, गृह प्रवेश जैसे कई शुभ कार्यों के साथ रक्षाबंधन पर राखी बांधने के लिए भी भद्रा काल से बचने की सलाह दी जाती है।

कौन हैं भद्रा?

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भद्रा सूर्य देव और माता छाया की पुत्री तथा शनिदेव की बहन मानी जाती हैं। धार्मिक कथाओं में उनका स्वरूप उग्र और स्वभाव क्रोधी बताया गया है। मान्यता है कि भद्रा के जन्म के बाद उनके उग्र स्वभाव के कारण देवता और मनुष्य चिंतित हो गए थे। वह यज्ञ, हवन और दूसरे मांगलिक कार्यों में बाधा डालने लगीं। उनकी इसी प्रकृति को देखते हुए उन्हें पंचांग के एक विशेष करण में स्थान दिया गया।

कैसा बताया गया है भद्रा का स्वरूप?

पौराणिक वर्णनों में भद्रा का रूप सामान्य देवी–स्वरूप से अलग और भय उत्पन्न करने वाला बताया गया है। उनका वर्ण काला, लंबे बाल और बड़े दांत बताए जाते हैं। कुछ धार्मिक कथाओं में उन्हें गधो के मुख, लंबी पूंछ और तीन पैरों वाले स्वरूप में भी वर्णित किया गया है। इन वर्णनों को धार्मिक और पौराणिक मान्यता के संदर्भ में ही समझना चाहिए। इनका उद्देश्य भद्रा के उग्र स्वभाव और उनके प्रतीकात्मक स्वरूप को बताना है।

भद्रा को पंचांग में स्थान क्यों मिला?

पौराणिक कथा के अनुसार भद्रा के उग्र स्वभाव से लोग परेशान होने लगे थे। तब उनके पिता सूर्य देव ने इस समस्या का समाधान खोजने के लिए ब्रह्मा जी से मार्गदर्शन लिया। मान्यता है कि ब्रह्मा जी ने भद्रा को पंचांग के विष्टि करण में स्थान दिया। इस तरह भद्रा का समय निश्चित हो गया और उनकी स्थिति पंचांग की गणना से निर्धारित होने लगी। इसी कारण से भद्रा को किसी एक पूरे दिन या स्थायी अवधि के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि पंचांग के अनुसार अलग–अलग समय पर आने वाले विष्टि करण के रूप में देखा जाता है।

भद्रा में शुभ कार्य क्यों नहीं किए जाते?

धार्मिक ज्योतिषीय मान्यताओं में भद्रा को शुभ कार्यों के लिए अनुपयुक्त समय माना गया है। माना जाता है कि इस दौरान किए गए मांगलिक कार्यों में बाधा या विलंब आ सकता है। इसी कारण विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन, नए कार्य की शुरुआत और अन्य शुभ संस्कारों के लिए भद्रा से बचने की परंपरा है। रक्षाबंधन पर भी भद्रा समाप्त होने के बाद ही राखी बांधने की सलाह दी जाती है। हालांकि इसे इस तरह नहीं समझना चाहिए कि भद्रा में किया गया हर काम निश्चित रूप से खराब ही होगा। यह मुख्य रूप से धार्मिक मान्यता और मुहूर्त–विचार का विषय है।

रक्षाबंधन पर भद्रा में क्यों नहीं बांधी जाती राखी?

रक्षाबंधन का मुख्य उद्देश्य भाई के लिए मंगलकामना और रक्षा का संकल्प है। इसलिए परंपरा में राखी बांधने के लिए शुभ समय का चुनाव किया जाता है और भद्रा काल से बचा जाता है। पंचांग परंपरा के अनुसार रक्षाबंधन की पूर्णिमा तिथि के दौरान यदि भद्रा मौजूद हो, तो उसके समाप्त होने के बाद राखी बांधने का मुहूर्त देखा जाता है। प्रसिद्ध पंचांग स्रोत भी रक्षाबंधन के रक्षा–सूत्र समारोह को भद्रा समाप्त होने के बाद करने की सलाह देते हैं।

क्या रावण की बहन ने भद्रा में बांधी थी राखी?

भद्रा और रक्षाबंधन से जुड़ी एक लोकप्रिय लोकमान्यता रावण और उसकी बहन शूर्पणखा से जुड़ी है। कथा के अनुसार, शूर्पणखा ने भद्रा काल में अपने भाई रावण को राखी बांधी थी। इसके बाद रावण और उसके पूरे कुल का विनाश हुआ। इसी लोकमान्यता के आधार पर कहा जाता है कि भद्रा के समय भाई को राखी नहीं बांधनी चाहिए। हालांकि, यह बात ध्यान रखना जरूरी है कि रावण–शूर्पणखा द्वारा रक्षाबंधन पर भद्रा में राखी बांधने की कथा को प्रमाणित प्राचीन रक्षाबंधन कथा के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं है। यह बाद की प्रचलित धार्मिकध्लोक मान्यताओं में मिलती है। रक्षाबंधन की अधिक प्राचीन और प्रमुख कथा–परंपराओं में इंद्राणी द्वारा इंद्र को रक्षा–सूत्र बांधने की कथा मिलती है, जिसका उल्लेख भविष्य पुराण से जोड़ा जाता है।

क्या भद्रा के दौरान कोई भी काम नहीं करना चाहिए?

भद्रा को मुख्य रूप से मांगलिक और शुभ कार्यों के लिए वर्जित समय माना जाता है।

संक्षिप्त

शेयर बाजार में बिकवाली हावी, सेंसेक्स 388 अंक लुढ़का, निफ्टी 24500 के नीचे बंद

नई दिल्ली,एजेंसी। मंगलवार को भारतीय शेयर बाजार में बिकवाली हावी रही। सेंसेक्स और निफ्टी दोनों प्रमुख सूचकांकों में करीब आधा फीसदी की कमी आई। कच्चे तेल के बढ़ते दाम और रुपये में कमजोरी से निवेशकों की धारणा प्रभावित हुई। भारतीय शेयर बाजार मंगलवार को गहरे लाल निशान में फिसल गया। सेंसेक्स 388 अंक से अधिक गिरकर 78,154 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं, निफ्टी 50 में 112 अंक से ज्यादा की गिरावट आई। निफ्टी सत्र के अंत में 24,472 पर समाप्त हुआ, जो 24,500 के महत्वपूर्ण स्तर से नीचे है। सेंसेक्स 0.49 फीसदी की गिरावट के साथ 78,154.25 पर बंद हुआ। निफ्टी 0.46 फीसदी की कमी के साथ 24,471.70 पर समाप्त हुआ। यह दोनों प्रमुख सूचकांकों के लिए एक नकारात्मक सत्र रहा। निवेशकों ने सतर्कता बरती और अपने निवेश में मुनाफावसूली की। व्यापक बाजारों में मिला–जुला रुख देखने को मिला। निफ्टी मिडकैप 100 लाल निशान में बंद हुआ। जबकि निफ्टी स्मॉलकैप 100 हरे निशान में रहा। टाटा कंज्यूमर के शेयरों में तीन फीसदी की बड़ी गिरावट दर्ज की गई। अल्ट्राटेक के शेयर भी दो फीसदी नीचे गिरे। भारतीय शेयर बाजार में गिरावट के कई कारण सामने आए हैं। कच्चे तेल की कीमतों में लगातार वृद्धि हो रही है, जिससे चिंताएं बढ़ी हैं। भारतीय रुपये का मूल्य भी डॉलर के मुकाबले कमजोर हुआ है। इन वैश्विक और घरेलू कारकों ने निवेशकों के उत्साह को कम किया। इसके चलते बाजार में बिकवाली का दबाव बढ़ गया और सूचकांक नीचे आए।

कार्यकाल खत्म होने से पहले ही विजय सिंह का इस्तीफा, क्या अंदरूनी कलह से डगमगाया भरोसा?

नई दिल्ली,एजेंसी। टाटा समूह की परोपकारी इकाई टाटा ट्रस्ट्स में इस समय एक बड़ी हलचल मची हुई है। इकोनॉमिक टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार सर रतन टाटा ट्रस्ट (त्ज्ज) के ट्रस्टी और ट्रस्ट्स के वाइस चेयरमैन विजय सिंह ने अपने पद से अचानक इस्तीफा दे दिया है। हैरान करने वाली बात यह है कि उनका कार्यकाल समाप्त होने में महज तीन दिन बचे थे, लेकिन उन्होंने समय से पहले ही पद छोड़ने का फैसला कर लिया। इस इस्तीफे को टाटा ट्रस्ट्स के भीतर चल रहे बड़े संगठनात्मक बदलावों और मतभेदों के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। टाटा ट्रस्ट्स के अहम अंग सर रतन टाटा ट्रस्ट के ट्रस्टी विजय सिंह का मौजूदा कार्यकाल 14 अगस्त को समाप्त होने वाला था। लेकिन उन्होंने कार्यकाल पूरा होने का भी इंतजार नहीं किया और उससे पहले ही अपना इस्तीफा बोर्ड को सौंप दिया। इस घटनाक्रम ने कॉर्पोरेट गलियारों में चर्चाओं का बाजार गर्म कर दिया है। ट्रस्ट डीड की शर्तें और पुराना इस्तीफा इसी साल मई में विजय सिंह और साथी वाइस चेयरमैन वेणु श्रीनिवासन ने टाटा एजुकेशन एंड डेवलपमेंट ट्रस्ट से भी इस्तीफा दे दिया था। उनका तर्क था कि वे 1923 के ट्रस्ट डीड की शर्तों को पूरा नहीं करते हैं, जिसके अनुसार ट्रस्टी का पारसी जोरोस्ट्रियन होना और मुंबई का स्थायी निवासी होना जरूरी है। टाटा संस की लिस्टिंग पर बयानरू सूत्रों का कहना है कि विजय सिंह के लिए सर रतन टाटा ट्रस्ट में अगले कार्यकाल के लिए साथी ट्रस्टियों से सर्वसम्मति से समर्थन पाना बहुत मुश्किल था। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्होंने पहले सार्वजनिक रूप से टाटा संस की संभावित लिस्टिंग के पक्ष में बयान दिए थे, जिससे ट्रस्ट के अन्य सदस्य सहमत नहीं थे। बैठकों पर प्रतिबंधः महाराष्ट्र चैरिटी कमिश्नर ने नवाजबाई के शेयरों के कथित ट्रांसफर और परपेचुअल (हमेशा के लिए) ट्रस्टी की नियुक्ति से जुड़ी एक शिकायत पर फैसला आने तक ट्रस्ट की बैठकों पर रोक लगा दी है। 400 करोड़ का खर्च अधर मेंरू इस रोक के कारण ट्रस्ट का लगभग 400 करोड़ का चैरिटेबल खर्च और शेयरधारकों से जुड़े आने वाले महत्वपूर्ण फैसले अभी खतरे में हैं। ट्रस्ट ने इन अहम फैसलों को लेने के लिए चौरिटी कमिश्नर से बैठकों की विशेष अनुमति मांगी है। वर्तमान में सर रतन टाटा ट्रस्ट के बोर्ड में देश की कई बड़ी हस्तियां शामिल हैं। इस बोर्ड का नेतृत्व चेयरमैन नोएल एन. टाटा कर रहे हैं और उनके साथ बोर्ड में वेणु श्रीनिवासन, विजय सिंह (इस्तीफे से पहले तक), जिमी एन. टाटा, जहांगीर एचसी जहांगीर और डेरियस खंबाटा शामिल हैं।

त्रिपुरा से दुबई भेजी गई सरसों शहद की पहली खेप

नई दिल्ली,एजेंसी। त्रिपुरा से दुबई के लिए 1 मिट्रिक टन सरसों शहद की पहली खेप का निर्यात किया गया है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के मुताबिक इससे लोकल मधुमक्खी पालकों के लिए नए अंतरराष्ट्रीय बाजार के मौके खुलेंगे। मंत्रालय के तहत आने वाले कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) ने त्रिपुरा के डेरगांग किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) द्वारा 1 मीट्रिक टन सरसों के शहद की दुबई को पहली बार निर्यात की सुविधा प्रदान की। यह निर्यात एफपीओ और क्षेत्र के लिए एक नई उपलब्धि है, क्योंकि इससे स्थानीय मधुमक्खी पालकों और किसानों के लिए संगठित निर्यात–उन्मुख उत्पादन के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच बनाने का अवसर सृजित हुआ है। सरकार के मुताबिक यह खेप इस क्षेत्र से सरसों के शहद का पहली बार निर्यात है और इससे त्रिपुरा की शहद मूल्य श्रृंखला में विविधीकरण के नए अवसर खुलेंगे। इस पहल से स्थानीय किसानों और एफपीओ को निर्यात के अवसर तलाशने तथा अंतरराष्ट्रीय कृषि बाजारों में अपनी भागीदारी मजबूत करने के लिए प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है। वाणिज्य मंत्रालय ने आगे कहा कि सरसों के शहद का यह निर्यात किसानों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने में एफपीओ के नेतृत्व में उत्पादों के एकत्रीकरण और उद्योग सहयोग की क्षमता को प्रदर्शित करता है।

संन्यास के बाद सचिन से लेकर कोहली तक ने किया संपर्क, रहाणे ने सभी को क्यों दिया एक ही जवाब?

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय क्रिकेट के अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास लेकर अपने लंबे करियर को विराम दे दिया है। भारतीय टेस्ट टीम के भरोसेमंद बल्लेबाज रहे रहाणे ने संन्यास के बाद बताया कि उनके फैसले पर क्रिकेट जगत के कई दिग्गजों ने उनसे संपर्क किया। इनमें महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली, रोहित शर्मा और जसप्रीत बुमराह जैसे नाम शामिल हैं। रहाणे ने द इंडियन एक्सप्रेस से बातचीत में बताया कि संन्यास की घोषणा के बाद उन्हें सबसे पहले सचिन तेंदुलकर का फोन आया था। सचिन ने उनसे कहा कि उन्हें उम्मीद थी कि रहाणे भारत के लिए इससे भी ज्यादा क्रिकेट खेलेंगे। रहाणे ने बताया कि उन्होंने सचिन से कहा कि वह अपने करियर को बिना किसी पछतावे के खत्म करना चाहते थे और इसे अनावश्यक रूप से आगे नहीं खींचना चाहते थे। इसके बाद पूर्व भारतीय क्रिकेटर इरफान पठान ने भी उन्हें फोन किया, जबकि चेतेश्वर पुजारा, विराट कोहली, रोहित शर्मा और जसप्रीत बुमराह ने उन्हें संदेश भेजकर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। रहाणे ने कहा कि उन्होंने सभी को एक ही जवाब दिया कि वह अपने फैसले से संतुष्ट हैं, क्योंकि उन्होंने क्रिकेट को अपना सब कुछ दिया। रहाणे ने कहा, श्सचिन पाजी का सबसे पहले फोन आया। उन्होंने कहा कि उन्हें लगा था कि मैं ज्यादा समय तक खेलूंगा। मैंने उनसे कहा कि मैं बिना किसी पछतावे के संन्यास ले रहा हूं और इसे खींचना नहीं चाहता था। इरफान पठान ने भी फोन किया, जबकि पुजारा, विराट, रोहित और बुमराह ने मुझे संदेश भेजे। मैंने सभी से यही कहा कि मैं संतुष्ट हूं, क्योंकि मैंने खेल को अपना सब कुछ दिया। उन्हें इस बात का एहसास हो रहा था कि जिस खेल से उन्होंने वर्षों तक प्यार किया, अब वह उसे दोबारा उसी तरह नहीं कर पाएंगे। रहाणे ने अपने करियर के दौरान चेतेश्वर पुजारा और विराट कोहली के साथ बिताए समय को भी याद किया। उन्होंने बताया कि पुजारा के साथ उन्होंने घरेलू क्रिकेट में काफी समय बिताया, जबकि विराट कोहली के साथ भारतीय टीम के लिए ज्यादा क्रिकेट खेला। रहाणे के मुताबिक, तीनों का लक्ष्य भारतीय टेस्ट टीम को शीर्ष पर पहुंचाना था। उन्होंने कहा कि 2015 में भारत के छठे या सातवें स्थान पर रहने से लेकर दुनिया की नंबर–1 टेस्ट टीम बनने तक का सफर उन्होंने साथ मिलकर तय किया। रहाणे ने कहा कि वे लगातार खेल को लेकर चर्चा और विश्लेषण करते थे, एक–दूसरे से सीखते थे और इसी दौरान उनके बीच मजबूत रिश्ता बना। उन्होंने यह भी माना कि नंबर–1 बनने से पहले टीम ने टेस्ट क्रिकेट में कई मुश्किल दौर भी देखे, लेकिन उस सफर का हिस्सा बनना उनके लिए बेहद खास और आनंददायक रहा। अजिंक्य रहाणे ने भारतीय टीम के लिए 85 टेस्ट, 90 वनडे और 20 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले। टेस्ट क्रिकेट में उनकी पहचान खास तौर पर विदेशी परिस्थितियों में एक भरोसेमंद बल्लेबाज के रूप में बनी। स्विंग और सीम वाली पिचों पर उनकी तकनीक और धैर्य ने उन्हें भारतीय टेस्ट टीम का अहम हिस्सा बनाया।

क्या श्रीलंका में स्लिप की छोटी–सी गलती पड़ सकती है भारी? पूर्व फील्डिंग कोच टी. दिलीप ने बताई वजह

नई दिल्ली,एजेंसी। श्रीलंका के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। टीम इंडिया ने हाल ही में तीन दिवसीय वॉर्म–अप मैच में शानदार जीत दर्ज की। अब टीम की नजर 15 अगस्त से शुरू हो रहे गॉल टेस्ट में दमदार प्रदर्शन पर है। इसी बीच टीम के पूर्व फील्डिंग कोच टी. दिलीप ने स्लिप कॉर्डन में फील्डरों की सही पोजिशनिंग को भारत के लिए अहम चुनौती बताया है। उन्होंने कहा कि तेज गेंदबाजों और स्पिनरों के खिलाफ स्लिप में कैच लेने के लिए फील्डरों के बीच दूरी बेहद सटीक रखना जरूरी होगा। भारतीय टीम के साथ करीब पांच साल का कार्यकाल पूरा कर चुके दिलीप के मुताबिक, स्लिप में फील्डिंग केवल रिफ्लेक्स पर निर्भर नहीं करती। विकेटकीपर और स्लिप फील्डरों के बीच की दूरी के साथ–साथ बल्लेबाज के मुकाबले प्रत्येक फील्डर की स्थिति को भी गेंदबाज और गेंद की प्रकृति के अनुसार लगातार बदलना पड़ता है। दिलीप ने बताया कि तेज गेंदबाजों के खिलाफ गेंद काफी तेजी से स्लिप क्षेत्र में पहुंचती है। ऐसे में फील्डरों के बीच ज्यादा दूरी होने पर गेंद को बगल की ओर जाकर पकड़ना मुश्किल हो सकता है। उन्होंने कहा, महत्वपूर्ण बात यह है कि फील्डरों के बीच गैप बेहद सटीक होना चाहिए, क्योंकि तेज गेंदबाजों के खिलाफ स्लिप क्षेत्र में गेंद काफी तेजी से आती है। आपके पास अपनी बगल की तरफ ज्यादा दूर जाने का समय नहीं होता।

दिलीप ने अफगानिस्तान के खिलाफ सीरीज का उदाहरण देते हुए बताया कि स्पिनरों के खिलाफ शुभमन गिल ने स्लिप फील्डरों की पोजिशनिंग पर विशेष ध्यान दिया था। उन्होंने कहा, स्पिनरों के खिलाफ हमने देखा कि अफगानिस्तान सीरीज में शुभमन ने उन्हें किस तरह से रखा था। आपको यह देखना होता है कि विकेटकीपर और स्लिप के बीच कितना गैप होना चाहिए, ताकि बल्लेबाज के बारीक एज को भी पकड़ा जा सके। दिलीप ने आगे बताया कि स्पिन की गति और टर्न के अनुसार फील्डर को बल्लेबाज से अपनी दूरी भी तय करनी होती है। उन्होंने कहा, श्यह भी देखना होता है कि गेंद कितनी तेजी या धीमी गति से टर्न कर रही है और आपको बल्लेबाज से कितनी दूरी पर खड़ा होना चाहिए। ये सभी चीजें बेहद महत्वपूर्ण होंगी। श्रीलंका की परिस्थितियों में स्पिन गेंदबाजों की भूमिका महत्वपूर्ण रहने की उम्मीद है। ऐसे में भारतीय टीम के लिए स्लिप कॉर्डन की सटीक पोजिशनिंग काफी मायने रख सकती है। दिलीप की सलाह से साफ है कि टेस्ट मैचों में कैचिंग के दौरान छोटी–छोटी तकनीकी बारीकियां भी मैच का रुख बदल सकती हैं। भारत अगर श्रीलंका के खिलाफ एज से मिलने वाले मौकों को विकेट में बदलना चाहता है, तो स्लिप में फील्डरों की सही दूरी और पोजिशनिंग पर विशेष ध्यान देना होगा।

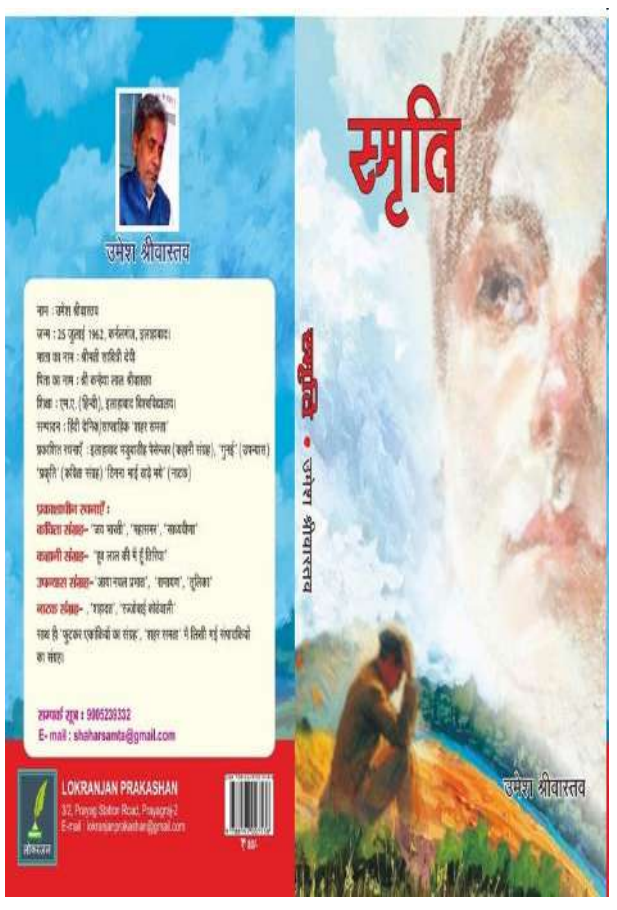

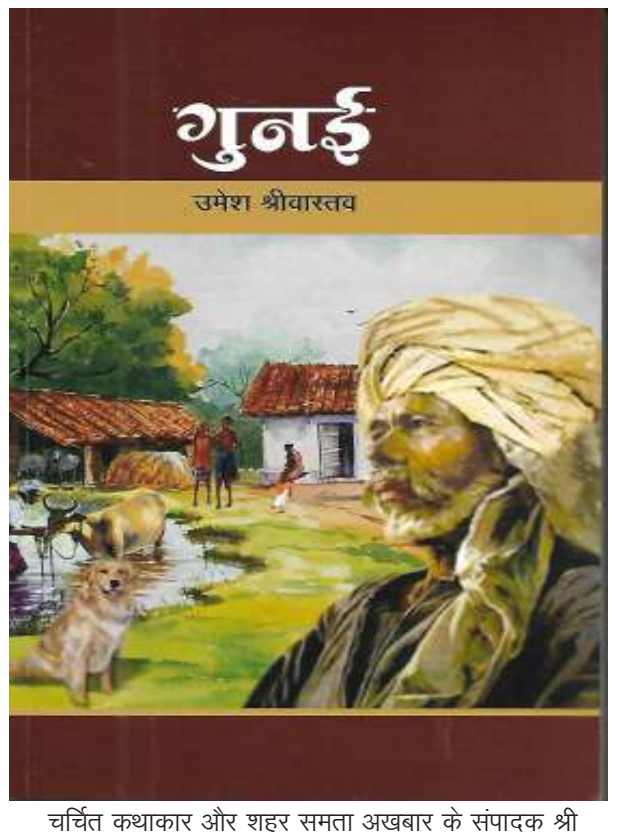

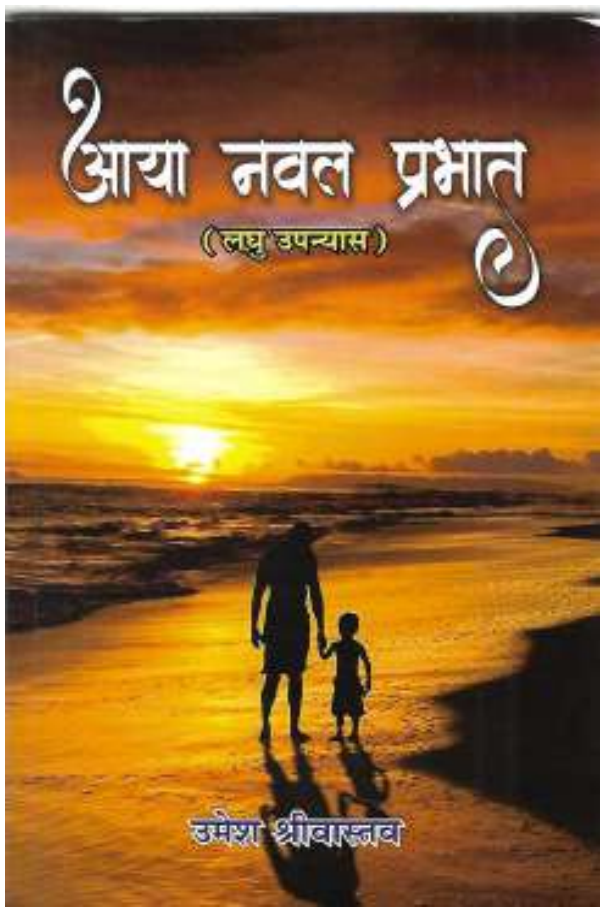

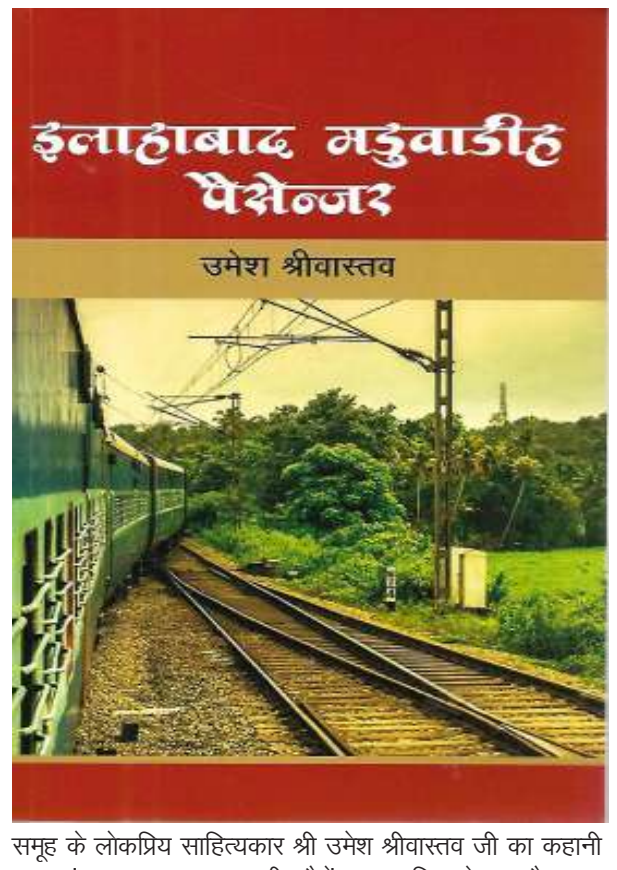

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

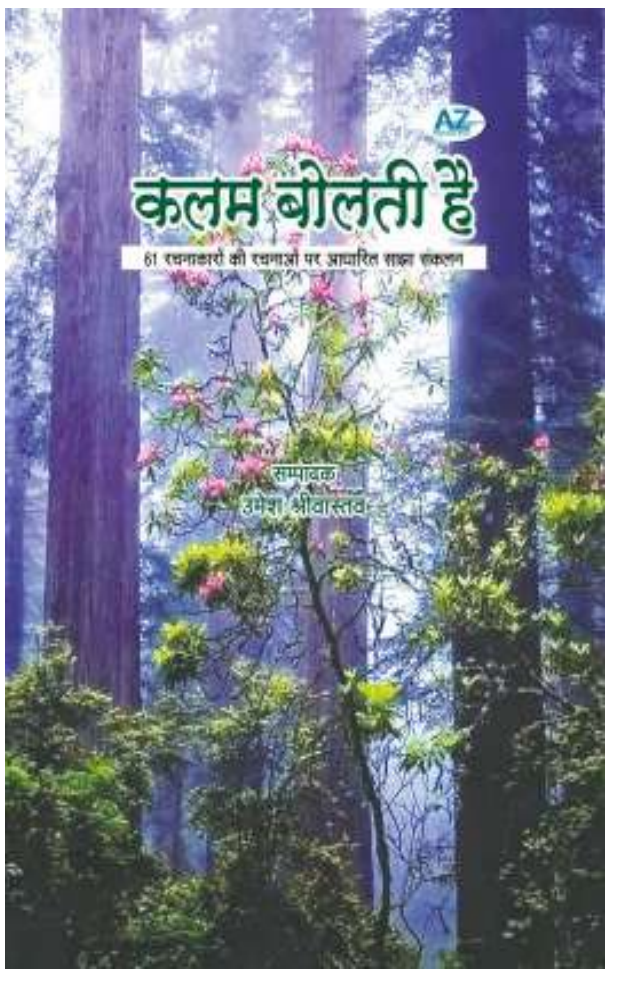

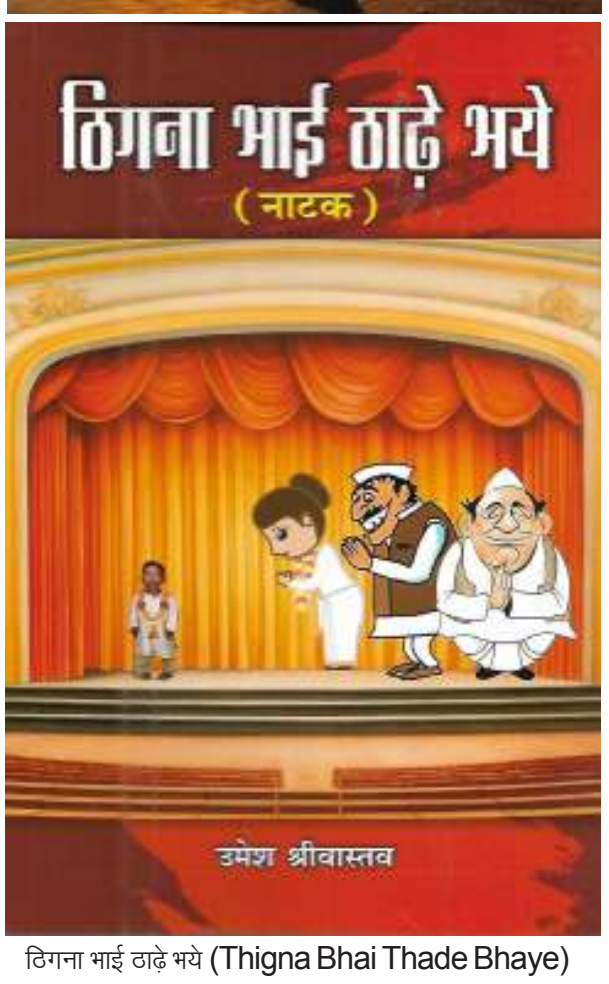

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

उड़ान भरते ही कैसे फटा चीन का लॉन्ग मार्च 7ए रॉकेट? सैटेलाइट भी हुआ नष्ट

बीजिंग, एजेंसी। चीन का लॉन्ग मार्च 7ए रॉकेट हैनान के वेनचांग लॉन्च साइट से उड़ान भरने के कुछ ही समय बाद

फट गया। इस हादसे में रॉकेट के साथ जा रहा सैटेलाइट भी नष्ट हो गया। चीनी सरकारी मीडिया के अनुसार, रॉकेट में हुए इस विस्फोट की जांच की जा रही है। लॉन्ग मार्च 7ए रॉकेट का यह अब तक का पहला असफल मिशन है। रॉकेट ने अपने पहले चरण की उड़ान वेनचांग से भरी थी। लेकिन उड़ान भरने के करीब 85 सेकंड बाद ऊपर जाने के शुरुआती चरण में इसमें कुछ खराबी दिखाई दी। इस घटना के कारण मिशन विफल हो गया। इससे चीन की लगातार बढ़ रही रॉकेट लॉन्च गतिविधियों को झटका लगा है। लॉन्ग मार्च 7ए रॉकेट की क्या खासियत है? लॉन्ग मार्च 7ए एक मध्यम से भारी वजन वाले सैटेलाइट को अंतरिक्ष में ले जाने वाला रॉकेट है। इसे चाइना एकेडमी ऑफ लॉन्च व्हीकल टेक्नोलॉजी ने बनाया है। इसे मुख्य रूप से सैटेलाइट को जियोस्टेशनरी ट्रांसफर ऑर्बिट यानी जीटीओ तक पहुंचाने के लिए बनाया गया है। यह चीन के रॉकेटों के परिवार का एक अहम हिस्सा है। सीजेड–7ए, लॉन्ग मार्च 7 से बनाया गया है। इसमें लिक्विड–फ्यूल इंजन वाला एक मुख्य हिस्सा और उसके साथ बूस्टर लगे हैं। इसका डिजाइन चीन को ज्यादा भारी पेलोड को पृथ्वी से ज्यादा ऊंचाई की अंतरिक्ष कक्षाओं तक पहुंचाने में मदद करता है। रॉकेट में विस्फोट क्यों हुआ? रॉकेट में विस्फोट क्यों हुआ, इसका कारण अभी स्पष्ट नहीं चला है। जांचकर्ता रॉकेट से मिले टेलीमेट्री और दूसरे डेटा का विश्लेषण करेंगे। इसका मकसद यह पता लगाना है कि पहले चरण में रॉकेट के ऊपर जाने के दौरान आखिर क्या गड़बड़ी हुई।

रूस के हमलों से यूक्रेन में तबाही, नौ की मौत, जेलेंस्की ने उत्तर कोरिया पर क्या आरोप लगाए?

कीव,एजेंसी। रूस के यूक्रेन पर ताजा हवाई हमलों में कम से कम नौ नागरिकों की मौत हुई है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने दावा किया कि जापोरिझझिया पर हमले में उत्तर कोरिया से मिली बैलिस्टिक मिसाइलों का इस्तेमाल हुआ। क्या रूस को उत्तर कोरिया से सैन्य मदद बढ़ रही है? क्या युद्ध और तेज होने वाला है? रूस ने मंगलवार को यूक्रेन के कई शहरों पर मिसाइलों, ड्रोन और ग्लाइड बमों से हमले किए, जिसमें कम से कम नौ नागरिकों की मौत हो गई। यूक्रेनी अधि ाकारियों के अनुसार, दक्षिण–पूर्वी शहर जापोरिझझिया में उत्तर कोरिया से मिले बैलिस्टिक मिसाइलों के इस्तेमाल का दावा किया गया है। इस हमले में छह लोगों की मौत और 19 लोग घायल हुए। वहीं, निप्रॉपेट्रोस क्षेत्र में तीन और लोगों की जान गई। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने कहा कि रूसी सेना ने रात के हमले में उत्तर कोरिया से मिली बैलिस्टिक मिसाइलों का इस्तेमाल किया। स्थानीय अधिकारियों के मुताबिक, जापोरिझझिया में हुए हमले में छह लोगों की मौत हुई और 19 लोग घायल हुए। जेलेंस्की ने सोमवार देर रात दावा किया कि रूस को प्योंगयांग से अतिरिक्त बैलिस्टिक मिसाइलें मिली हैं और वह उत्तर कोरिया के और सैनिकों को तैनात करने की तैयारी कर रहा है।जेलेंस्की के अनुसार, रूस को उत्तर कोरिया से अतिरिक्त सैन्य सहायता मिल रही है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन ने दो साल से कुछ अधिक समय पहले रणनीतिक साझेदारी समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इस समझौते में किसी भी देश पर आक्रमण होने की स्थिति में एक–दूसरे की मदद का प्रावध ाान है।

यूक्रेन का कहना है कि उत्तर कोरिया ने रूस के समर्थन में हजारों सैनिक और बड़ी मात्रा में हथियार भेजे हैं। जेलेंस्की ने चेतावनी दी कि युद्ध का अनुभव उत्तर कोरिया की सैन्य क्षमताओं को मजबूत कर सकता है। रूसी हमलों में यूक्रेन की राजधानी कीव के कुछ हिस्सों को भी निशाना बनाया गया। यूक्रेन की स्टेट इमरजेंसी सर्विस के अनुसार, एक हमला बच्चों के अस्पताल के परिसर में हुआ, जहां दो गड्ढे बने और खिड़कियां टूट गईं। बच्चों और चिकित्सा कर्मचारियों के बम शेल्टर में होने के कारण किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। राजधानी में एक अन्य स्थान पर रूसी हमले के बाद एक गोदाम में आग लग गई, जो करीब 1,200 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैल गई। रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि उसकी सेना ने कीव और जापोरिझझिया में सैन्य औद्योगिक प्रतिष्ठानों तथा परिवहन और लॉजिस्टिक्स केंद्रों पर जमीनी सटीक हथियारों से हमला किया। मंत्रालय के अनुसार, कीव में ड्रोन भंडारण केंद्रों और जापोरिझझिया में एक धातुकर्म संयंत्र को निशाना बनाया गया। यूक्रेनी वायुसेना ने कहा कि रूस ने जापोरिझझिया और कीव पर जिरकॉन एंटी–शिप मिसाइलों और इस्कंदर बैलिस्टिक मिसाइलों से हमला किया। इसके अलावा देशभर में 120 लंबी दूरी के हमलावर ड्रोन भी लॉन्च किए गए। रूस के रक्षा मंत्रालय ने दावा किया कि उसकी वायु रक्षा प्रणालियों ने रातभर में रूस के 14 क्षेत्रों और कब्जे वाले क्रीमिया के ऊपर लगभग 400 यूक्रेनी ड्रोन को रोक दिया। रूस की ऑनलाइन रिटेल कंपनी वाइल्डबेरीज ने भी बताया कि यूक्रेन की सीमा से लगे वोरोनिश क्षेत्र में उसके लॉजिस्टिक केंद्रों पर हमला हुआ और आग लग गई।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227

कैटरिंग ट्रक में छिपकर ट्रंप ने बदला विमान: ईरान की धमकी के बीच कैसे तुर्किये से निकले? रिपोर्ट में दावा

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को पिछले महीने तुर्किये यात्रा के दौरान कथित तौर पर हत्या की धमकी मिली थी। इसके बाद ट्रंप ने कतर से मिले बोइंग 747–8 विमान को छोड़कर छोटे सी–32ए विमान से गुपचुप तरीके से तुर्किये से बाहर उड़ान भरी। वह इसी कतर से मिले विमान से तुर्किये पहुंचे थे। पिछले महीने आई रिपोर्ट के अनुसार, कथित धमकी के कारण अमेरिकी राष्ट्रपति ने कतर से मिले नए विमान के बजाय पुराने बोइंग 747 विमान से यात्रा की थी। हालांकि, अब वॉशिंगटन पोस्ट की नई रिपोर्ट में कहा गया है कि ट्रंप ने एक बार फिर विमान बदल दिया था। पोस्ट ने एक अमेरिकी अधिकारी के हवाले से बताया कि ट्रंप को पुराने एयर फोर्स वन विमान से एक कैटरिंग कंटेनर में बाहर निकाला गया।

यह कंटेनर ट्रंप को एक छोटे सी–32ए विमान तक ले गया। इसी विमान से उन्होंने ब्रिटेन के लिए उड़ान भरी। मीडिया और कुछ अधिकारियों को यह विश्वास दिलाया गया कि अमेरिकी राष्ट्रपति अभी भी पुराने बड़े बोइंग 747 विमान में ही हैं। अंकारा से पुराने विमान में रवाना हुए पत्रकारों से भी खिड़कियों के पर्दे नीचे रखने को कहा गया था। ट्रंप उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए अंकारा में थे। उस समय उन्होंने कहा था कि वह पुराने बोइंग 747 से यात्रा करेंगे, ताकि ब्रिटेन के एक एयरबेस पर मौजूद अमेरिकी सेना के सदस्य नए विमान को देख सकें। हालांकि, न्यूयॉर्क टाइम्स समेत कई अमेरिकी मीडिया संस्थानों ने बताया कि ईरान समर्थित समूहों से मिली धमकी के कारण विमान बदला गया था। वीडियो में दिखा ट्रंप को ले जाने वाला कैटरिंग ट्रक वॉशिंगटन पोस्ट ने एक कैटरिंग ट्रक का वीडियो भी साझा किया। यह ट्रक पुराने बोइंग विमान से नीचे उतारा जा रहा था। यह घटना ट्रंप के विमान में जाने के कुछ मिनट बाद की है। वीडियो में कैटरिंग वाहन को छोटे सी–32ए विमान की ओर जाते हुए देखा जा सकता है। अमर उजाला ने इस वीडियो की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं की है। हालांकि, ब्रिटेन पहुंचने पर ट्रंप बड़े विमान से बाहर निकले। दोनों विमान ब्रिटेन में उतरे थे। इसके बाद ट्रंप को कतर से मिले और नए रूप में तैयार किए गए एयर फोर्स वन विमान में ले जाया गया।यह साफ नहीं हो पाया कि ट्रंप ने छोटे विमान से बड़े विमान में कब और किस तरह सफर बदला। कतर से मिले विमान की सुरक्षा पर भी उठे सवाल विमान बदलने की इस घटना के बाद कतर से मिले विमान की सुरक्षा को लेकर भी सवाल उठने लगे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इस विमान में पुराने एयर फोर्स वन विमानों में मौजूद कुछ सुरक्षा सुविधाएं नहीं हैं। इनमें मिसाइल रोधी सुरक्षा भी शामिल है। कतर के शाही परिवार ने पिछले साल यह लग्जरी विमान ट्रंप को दिया था। इससे पहले ट्रंप ने 1990 से एयर फोर्स वन के तौर पर इस्तेमाल हो रहे पुराने बोइंग 747 विमानों की आलोचना की थी। इस विमान को तेजी से सुरक्षा सुविधाओं से लैस किया गया। इसके बाद एक जुलाई को ट्रंप ने पहली बार इस विमान से नॉर्थ डकोटा की यात्रा की। इसके बाद यह विमान पहली विदेश यात्रा पर तुर्किये गया। व्हाइट हाउस ने विमान की सुरक्षा सुविध ााओं का बचाव किया। उसने इसे श्अत्याधुनिकश् बताया और कहा कि इसमें बेहद उच्च स्तर की सुरक्षा के इंतजाम हैं। अधिकारियों ने कहा कि ट्रंप की सुरक्षा के लिए उपलब्ध सभी उपायों का इस्तेमाल किया जा रहा है।

ट्रंप ने फिर की इस्लाम विरोधी बयानबाजी, आखिर क्यों कहा- वे तुम्हारे घरों पर कब्जा करने आ रहे हैं

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर से इस्लाम विरोधी बयानबाजी करते हुए डेमोक्रेटिक पार्टी के मुस्लिम उम्मीदवारों पर निशाना साधा। एक सोशल मीडिया पोस्ट में ट्रंप ने आगामी मध्याविधि चुनाव में मिशिगन सीट से सीनेट में डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार अब्दुल अल सईद को निशाना बनाया है। ट्रंप पर क्यों लगा इस्लाम विरोध ाी बयानबाजी का आरोप?

ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर एक तस्वीर साझा की। इस तस्वीर में अब्दुल अल सईद को हिजाब पहने महिलाओं सहित भीड़ के सामने खड़े दिखाया गया है और इस तस्वीर के साथ कैप्शन लिखा है, श्वे आपके घर और आपके सामान के लिए आ रहे हैं।श ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर एक तस्वीर साझा की। इस तस्वीर में अब्दुल अल सईद को हिजाब पहने महिलाओं सहित भीड़ के सामने खड़े दिखाया गया है और इस तस्वीर के साथ कैप्शन लिखा है, श्वे आपके घर और आपके सामान के लिए आ रहे हैं।श इससे पहले भी ट्रंप ने अपनी और अपनी पत्नी मेलानिया ट्रंप की तस्वीर के साथ अब्दुल अल सईद और उनकी पत्नी की तस्वीर को साझा करते हुए कैप्शन दिया था कि श्दो बिल्कुल अलग अमेरिका गौरतलब है कि अब्दुल अल सईद पिछले सप्ताह ही आगामी मध्याविधि चुनाव के लिए मिशिगन सीट से सीनेट के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी का नामांकन जीते हैं। उन्होंने इस चर्चित प्राइमरी चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी द्वारा समर्थित उम्मीदवार हेली स्टीवंस को हराया था। मीडिया के साथ बातचीत में भी ट्रंप ने डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवारों की आलोचना की थी। ट्रंप ने कहा था कि लोकतांत्रिक प्राथमिक चुनावों में जिहादियों को चुना जा रहा है। साथ ही ट्रंप ने डेमोक्रेट उम्मीदवारों को नीतिगत बदलावों पर विचारों को बेवकूफी भरा करार दिया। ट्रंप ने कहा, एक बात तो है कि हमारे यहां हर जगह जिहादी चुने जा रहे हैं। चाहे वह साम्यवाद हो या जिहादी, यही स्थिति है। अगर आप दूसरे देशों में जाएं और देखें तो मुझे नहीं लगता कि हम उस तरह से जीना चाहेंगे। ट्रंप ने सोमालिया मूल के लोगों की भी आलोचना की। उन्होंने दावा किया कि सोमाली मूल के लोग बुद्धिमान नहीं होते और उनमें योग्यता की भी कमी होती है। उनके पास करने के लिए कुछ भी नहीं है। साथ ही उन्होंने सोमाली मूल के नेताओं पर आरोप लगाया कि वे अमेरिकियों को बताते हैं कि देश कैसे चलाया जाए।

सर्जनों को रिश्वत देने के मामले में भारतीय मूल के सीएफओ को जेल, आखिर क्या है पूरा मामला?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की एक संघीय अदालत ने स्पाइनल इंप्लांट कंपनी के भारतीय मूल के मुख्य वित्तीय अधि ाकारी (ब्थ्व्) को सर्जनों को रिश्वत देने के मामले में चार महीने जेल की सजा सुनाई है। दरअसल सीएफओ ने कंपनी के उत्पादों

का इस्तेमाल करने के लिए सर्जनों को रिश्वत देने की कोशिश की। अधिकारियों ने बताया कि सर्जनों को यह रिश्वत फर्जी परामर्श शुल्क के रूप में दी गई थी। भारतीय मूल के सीएफओ पर क्या आरोप लगे हैं जेल की सजा पूरी करने के बाद कैम्ब्रिज निवासी 41 वर्षीय आदित्य हुमाड को एक साल तक निगरानी में रहना होगा और उन पर 9,500 अमेरिकी डॉलर का जुर्माना भी लगाया गया है। हुमाड ने एंटी–किकबैक कानून के उल्लंघन की साजिश रचने के आरोप में अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। हुमाड पर सितंबर 2021 में स्पाइन फ्रंटियर नामक कंपनी के संस्थापक, अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (ब्म्व्) किंग्सले आर. चिन के साथ आरोप लगाए गए थे। मैसाचुसेट्स जिले के अमेरिकी अटॉर्नी कार्यालय ने सोमवार को जारी एक बयान में कहा कि हुमाड ने उन सर्जनों को 5,40,000 अमेरिकी डॉलर से अधिक की रिश्वत देने और दिलाने की साजिश रची। यह रकम ऐसे फर्जी परामर्श शुल्क के रूप में दी गई, जिनके लिए सर्जनों ने वास्तव में कोई काम नहीं किया था। अधिकारियों के अनुसार, हुमाड ने सर्जनों को कंपनी के उत्पादों का इस्तेमाल करने के लिए रिश्वत देने की साजिश रची। इसके बदले कंपनी को इन सर्जनों द्वारा की गई सर्जरी से लाखों डॉलर का राजस्व प्राप्त हुआ। 40 लाख डॉलर की रकम जब्त अमेरिकी अटॉर्नी लीह बी. फोले ने कहा कि हुमाड को जटिल रीढ़ की सर्जरी में चिकित्सकों को कंपनी के उत्पादों का इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से रिश्वत देने की साजिश रचने का दोषी ठहराया गया है और सजा सुनाई गई है। उन्होंने कहा, श्आपराधिक और दीवानी कार्यवाही में हमने इन अधिकारियों, उनकी कंपनियों और रिश्वत लेने वाले चिकित्सकों से 40 लाख अमेरिकी डॉलर से अधिक की रकम बरामद की है। उन्होंने कहा कि योजना कितनी भी जटिल हो या इसमें कितना भी समय लगे, हम स्वास्थ्य सेवा से जुड़े धोखाधड़ी के अपराध ाों के खिलाफ कार्रवाई करेंगे।

'हम अकेले बोझ नहीं उठाएंगे': चीन के बढ़ते दबदबे का असर, क्या एशिया को भी बेसहारा छोड़ रहा अमेरिका?

मनीला, एजेंसी। पेंटागन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने एशिया में अपने सहयोगी देशों से रक्षा क्षेत्र में अधिक निवेश करने की अपील की है। उन्होंने ये भी कहा कि अमेरिका अपने सहयोगी देशों के साथ साझेदार के रूप में काम करना चाहता है न कि संरक्षित देशों के रूप में। अमेरिकी अधिकारी के इस बड़े बयान के बाद कयास लगाए जा रहे हैं कि क्या यूरोप की तरह अब अमेरिका एशिया में भी अपनी मौजूदगी को सीमित करने पर विचार कर रहा है? गौरतलब बात ये है कि ये बयान ऐसे समय सामने आया है, जब चीन एशिया में अपना दबदबा लगातार बढ़ा रहा है और उसका कई एशियाई देशों के साथ समुद्री सीमा को लेकर विवाद चल रहा है। अमेरिकी अधिकारी ने फिलीपींस में की ये टिप्पणी अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन में अंडर सेक्रेटरी एल्ब्रिज कोल्बी ने फिलीपींस में एक कार्यक्रम के दौरान यह टिप्पणी की। कोल्बी इन दिनों दक्षिण–पूर्व एशिया के दौरे पर हैं और अपने पहले पड़ाव पर वह फिलीपींस पहुंचे हैं। इसके बाद वह इंडोनेशिया, थाईलैंड और कंबोडिया का दौरा करेंगे। कोल्बी ने यह भी दोहराया कि ईरान युद्ध और मध्य पूर्व में मौजूदा अमेरिकी व्यस्तताओं के बावजूद वाशिंगटन एशिया से पीछे नहीं हट रहा है। कोल्बी ने विदेशी राजनयिकों, सैन्य अधिकारियों, कारोबारियों और पत्रकारों की मौजूदगी वाले कार्यक्रम में कहा, श्अमेरिका बेशक एशिया से पीछे नहीं हट रहा है और हमारे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित यहां हमारी स्थायी मौजूदगी की मांग करते हैं। हम जा नहीं रहे हैंय बल्कि हम यहां अपनी स्थिति और मजबूत कर रहे हैं, ताकि शक्ति संतुलन हमारे अनुकूल बना रहे। हम एशिया को बेहद अहम क्षेत्र मानते हैं। चीन की आलोचना से किया परहेज कोल्बी ने क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता को लेकर अमेरिका की ओर से आमतौर पर की जाने वाली तीखी आलोचना से परहेज किया। इसमें विवादित दक्षिण चीन सागर में चीन की गतिविधियां भी शामिल हैं। वाशिंगटन पिछले कुछ वर्षों में फिलीपींस के तटरक्षक और नौसैनिक बलों के खिलाफ बीजिंग की बढ़ती आक्रामक कार्रवाइयों पर बार–बार चिंता जताता रहा है। चीन और फिलीपींस के साथ–साथ वियतनाम, मलेशिया, ब्रुनेई और ताइवान दशकों से विवादित जलक्षेत्र को लेकर आमने–सामने हैं। यह जलमार्ग वैश्विक व्यापार के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। बीजिंग लगभग पूरे दक्षिण चीन सागर पर अपना दावा करता है। उसने 2016 में फिलीपींस द्वारा शुरू किए गए मध्यस्थता मामले में आए उस फैसले को भी खारिज कर दिया है, जिसमें चीन के दावों को अमान्य कर दिया गया था। सहयोगी देशों से रक्षा क्षेत्र में निवेश की अपील कोल्बी ने अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ द्वारा मई में सिंगापुर में आयोजित शांगरी–ला रक्षा सम्मेलन में दिए गए भाषण में जताई गई प्रतिबद्धता को दोहराया। हेगसेथ ने कहा था कि अमेरिका पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में एक मजबूत रक्षा व्यवस्था तैयार करेगा। कोल्बी ने कहा कि श्अमेरिका यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि जहां सबसे ज्यादा जरूरत है, वहां हम सैन्य क्षमता बनाए रख सकें। हालांकि, यह रक्षा ढांचा केवल अमेरिकी प्रयासों के भरोसे नहीं टिक सकता।

भूकंप में अब तक 132 मौतें, 570 घायल, दुनियाभर से मदद, तबाही पर मैक्रों-रुबियो क्या बोले?

बोगोटा, एजेंसी। दक्षिण अमेरिकी देश कोलंबिया में 7.4 तीव्रता के शक्तिशाली भूकंप ने कई इलाकों को हिलाकर रख दिया। भूकंप के बाद बड़े पैमाने पर राहत और बचाव अभियान चलाया जा रहा है। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक कम से कम 132 लोगों की मौत हुई है, जबकि कई लोग मलबे के नीचे फंसे हुए हैं। पश्चिमी कोलंबिया में आए इस भूकंप का असर पड़ोसी देश इक्वाडोर में भी महसूस किया गया। हादसे के बाद स्थानीय स्तर पर बचाव दल प्रभावित इलाकों में लोगों की तलाश में जुटे हैं।

दुनिया के नेताओं ने कोलंबिया के लिए क्या कहा? भूकंप की तबाही के बाद कई देशों के नेताओं ने कोलंबिया के लोगों के प्रति संवेदना और समर्थन जताया है। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने कहा कि मुश्किल की इस घड़ी में कोलंबिया फ्रांस की दोस्ती और मदद पर भरोसा कर सकता है। उन्होंने भूकंप में मारे गए लोगों, उनके परिवारों, घायलों और प्रभावित लोगों के प्रति संवेदना जताई। मैक्रों ने राहत और बचाव कार्य में जुटे लोगों की भी सराहना की। यूक्रेन और इटली ने किस तरह जताई एकजुटता? यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने भी कोलंबिया के लोगों के साथ एकजुटता जताई। उन्होंने कहा कि पश्चिमी कोलंबिया में आए भूकंप की खबर बेहद दुखद है और इसका असर पड़ोसी इक्वाडोर पर भी पड़ा है। उन्होंने मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना जताते हुए दुनिया के सक्षम देशों से प्रभावित लोगों और देशों की मदद के लिए आगे आने की अपील की। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने भी कहा कि वह कोलंबिया में आए भीषण भूकंप से जुड़ी खबरों पर नजर रख रही हैं और इटली प्रभावित परिवारों तथा बचाव कार्य में जुटे लोगों के साथ खड़ा है। भूकंप से प्रभावित कोलंबिया के लिए पड़ोसी इक्वाडोर ने तत्काल मदद की पेशकश की है। इक्वाडोर के राष्ट्रपति डेनियल नोबोआ अजिन ने कहा कि उनका देश कोलंबिया के साथ खड़ा है।

ईरान-जर्मनी के विदेश मंत्रियों ने बातचीत, मोजतबा खामेनेई ने छह अहम पदों पर की नियुक्तियां

तेहरान, एजेंसी। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची और उनके जर्मन समकक्ष जोहान वाडेफुल ने फोन पर बातचीत की। दोनों ने होर्मुज जलडमरूमध्य की स्थिति और जारी संघर्ष को खत्म करने के तरीकों पर चर्चा की। अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, बातचीत के दौरान अराघची ने कहा कि होर्मुज जलडमरूमध्य की सुरक्षा तभी सुनिश्चित हो सकती है, जब अमेरिका अपने सैन्य अभियान बंद करे। उन्होंने अमेरिका की ओर से ईरान के बंदरगाहों पर लगाई गई नाकाबंदी का भी जिक्र किया।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।